।। ओ३म् ।।

# आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष–17 | अंक–8 | श्रावण कृ. 4 से श्रावण शु. 5 | सं. 2075 वि. | 1 से 15 अगस्त 2018 | अमरोहा, उ.प्र. | पृ. 16 | प्रति–5/–

## भारत की राजधानी दिल्ली में होगा विश्व भर के आर्यों का महाकुंभ

# अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

## २५ से २८ अक्टूबर–२०१८

**नई दिल्ली।** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली' का भव्य आयोजन दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी में दिनांक 25-26-27 एवं 28 अक्टूबर, 2018 तक किया जा रहा है। देश सहित सारे आर्यजगत में इसकी तैयारियां आरम्भ हो चुकी हैं। वर्ष 2012 के दिल्ली महासम्मेलन के उपरान्त दक्षिणी अफ्रीका, सिंगापुर-थाईलैंड, आस्ट्रेलिया, नेपाल एवं बर्मा में सफल आयोजनों के पश्चात् दिल्ली में पुन: इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

शेष पृष्ठ- ६ पर...

## उदयपुर में ६ से होगा कालजयी ग्रन्थ

# सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

**उदयपुर।** राजस्थान प्रान्त की अत्यन्त मनोरम नगरी उदयपुर जहां नवलखा महल में बैठकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की, में 6 से 8 अक्टूबर 2018 तक 21वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का भव्य आयोजन किया जायेगा।

ज्ञातव्य है कि 1992 में यह महल आर्यसमाज को हस्तगत किया गया था। निरन्तर पुरुषार्थ व जनता के सहयोग व स्नेह से अब यह एक सुन्दर स्मारक बन गया है जहां प्रतिवर्ष 30 हजार से भी अधिक पर्यटक आते हैं। कार्यक्रम के सम्बन्ध में मोबा. : 7229948860 तथा 9314235101 पर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

# मॉरीशस में विश्व हिन्दी सम्मेलन

**नई दिल्ली।** 18 से 20 अगस्त तक मॉरीशस में होने वाले विश्व हिन्दी सम्मेलन की तैयारियां शिखर पर हैं। विदेशमंत्री सुषमा स्वराज ने आशा व्यक्त की है कि यह 11वां विश्व हिन्दी सम्मेलन वैश्विक पटल पर हिन्दी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व वर्ष 1976 और 1993 में भी मॉरीशस में विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। इससे पूर्व भारत में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में विश्व हिन्दी सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ था। इस सम्मेलन में विश्व भर से हिन्दी प्रेमी भारी संख्या में भाग लेंगे।

## महासम्मेलन स्मारिका का भव्य प्रकाशन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन- 2018 के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका हेतु वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से निवेदन है कि वे आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों आदि से संबन्धित महत्वपूर्ण लेख भेजें।

यदि आप अपना कोई विज्ञापन, अपनी संस्था/ आर्य समाज/ अपने परिवार के संबन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं, तो आप विज्ञापन के रूप में अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं।

संपर्क : संयोजक स्मारिका, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, ईमेल : aryasabha@yahoo.com

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की पुण्यभूमि में ६ से ८ अक्टूबर तक हजारों आर्यों की उपस्थिति में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ

# अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

विस्तृत रिपोर्ट पृष्ठ-8 पर

# वैदिक संस्कृति का अनमोल खजाना हैं गुरुकुल : ठा० विक्रम सिंह

**सुमन कुमार वैदिक**
बिजनौर (उ0प्र0)

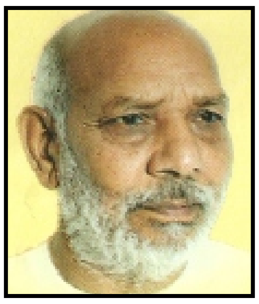

संस्कृति की रक्षा केवल गुरुकुल शिक्षा से ही हो सकती है। बालिकाओं को विदुषी, चरित्रवान् तथा संस्कारी बनाने के लिए गुरुकुल प्रणाली में बच्चों का प्रवेश करायें। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पढ़ा बालक धन और विलासिता की चकाचौंध में आकर्षित होकर भागा जा रहा है। वह अपने अस्तित्व को भी खो रहा है। परिवार और समाज का स्वरूप बदल रहा है। गुरुकुल वैदिक संस्कृति का अनमोल खजाना है। ये विचार ठाकुर विक्रम सिंह ने गुरुकुल नवनपुर, बिजनौर में नयी यज्ञशाला का उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कहे। उन्होंने कहा कि हम सदैव गुरुकुलों की मदद करते हैं, इसकी भी मदद करेंगे। गुरुकुल वैदिक संस्कृति का अनमोल खजाना है। इससे पूर्व सेठी जी ने ध्वजारोहण किया।

इस अवसर पर प्रबन्धक सुशील त्यागी ने कहा कि वैदिक संस्कृति के लिए अब मैं अपना जीवन समर्पित कर रहा हूं। आधुनिक शिक्षा ने हमें पंगु बना कर रख दिया है। आचार्य विजयपाल शास्त्री ने यज्ञ के विषय में बताया। कुलदिलीप विद्यार्थी और देवेन्द्र सत्यार्थी ने सुमधुर भजनों से ज्ञानवर्द्धन किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आचार्य विजयपाल के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

# ओ३म् साधना मण्डल द्वारा योग, यज्ञ और वेद प्रचार

**मनीषा**
**रांची।**

आर्य समाज बेलगढ़ा कान्हा चट्टी में क्रमशः दो दिवसीय सरल योग प्रशिक्षण लगातार आठ दिन का संपन्न हुआ, जिसमें स्वामी दयानन्द विदेह (संस्थापक ओ३म् साधना मण्डल) के मार्गदर्शन में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि पर स्वामी जी समझाते रहे। उन्होंने कहा कि आहार विद्या और शरीर विद्या का जिसे ज्ञान नहीं है, वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। योग के द्वारा प्राणायाम के माध्यम से शरीर और आत्मा के मल को दूर किया जाता है। न जाने जन्म-जन्मांतर से हमारे जीवन में कचरे भरे पड़े हैं। उसे ध्यान और सांस के द्वारा शुद्ध किया जाता है। इस प्रकार वेदमंत्रों के माध्यम से वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए उपरोक्त स्थानों पर स्वामी जी ने संबोधित किया।

नई दिल्ली से पधारकर स्वामी आर्यवेश ने संबोधित किया। आर्य समाज के स्वामी सवितानन्द, सत्येन्द्र धर्मेन्द्र गिरधारीलाल, विजयजी, रोहन जी, के सहयोग से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज रांची में साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर स्वामी जी ने विशेष यज्ञ पर प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने बताया कि जहां सुगंधी अर्थात् जीवन में यज्ञ नहीं है, वह पृथ्वी पर भार है।

# निराश्रित बच्चों के साथ मनाया जन्मदिन

**अरविन्द पाण्डेय**
**कोटा (राजस्थान)**

रंगबाड़ी स्थित मधुस्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के मध्य जाकर डी.ए.वी. कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने अपनी पत्नी व पुत्र के साथ अपना 49वाँ जन्मदिन मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के बच्चों के द्वारा गायत्री मंत्र के सस्वर गायन एवं भजन से हुआ। इस अवसर पर शोभाराम आर्य ने संस्थान के बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में कभी निराश मत होना, कभी अपने आप को हीन मत समझना क्योंकि समाज में ऐसे अनेक लोग है जो आपके जीवन के स्तर को उठाने के विषय में लगातार सोचते रहते है।

इस अवसर पर आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा एवं आर.सी. आर्य ने शोभाराम आर्य को जन्मदिन पर शुभकामनाऐं दी साथ ही यह विश्वास भी व्यक्त किया कि ईश्वर करे कि आपकी समाजोपयोगी कार्यो के प्रति रुचि इसी प्रकार न केवल बनी रहे बल्कि इससे भी उच्च स्थिति को प्राप्त करे। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के सभी बच्चों को उपहार दिए गए तथा अन्य अधयापकों कर्मियों अथितियों के साथ सभी ने जलपान किया। संस्थान की डा. अंजलि निर्भीक ने आर्य समाज एवं अन्य सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

# डीएवी में चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

**सुदर्शन आर्य**
सोनीपत (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्यवीर दल, हरियाणा के आशीर्वाद एवं नेतृत्व में आर्य वीर दल, सोनीपत की ओर से स्थानीय डीएवी स्कूल, सैक्टर 15, सोनीपत में 3 से 10 जून तक युवा चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। सोनीपत, दिल्ली, नोएडा, एवं निकटवर्ती ग्रामों के विद्यालयों के छठी से स्नातक स्तर के छात्रों, उदीयमान युवाओं की शताधिक संख्या ने शिविर में लाभ प्राप्त किया।

आठ दिवसीय आवासीय शिविर में विख्यात दर्शनाचार्य संदीप की आध्यक्षता में छत्तीसगढ़ से पधारे मुख्य व्यायाम शिक्षक शैलकुमार ने शिविरार्थियों को सर्वांग व्यायाम, योगासन, आत्मरक्षार्थ जूडो, कराटे, लाठी आदि का प्रशिक्षण दिया। शिविरार्थियों ने कई प्रकार के आसन, व्यायाम, लाठी चलाने की विद्या के अतिरिक्त मानवपुल, स्तूप, पिरामिड आदि निर्माण की कला का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

उदीयमान युवाओं, बच्चों, छात्रों को बल, शक्ति संचय के माध्यम से स्वावलम्बी बनाने, उनमें नैतिकता, चरित्र निर्माण, संस्कारों के बीज आरोपित कर देश, धर्म, जाति, संस्कृति की उन्नति के निमित्त तैयार करने के उद्देश्य से उन्हें बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया गया। ईश्वर, धर्म, योग के सच्चे स्वरूप, जड़-चेतन का अन्तर, सच्ची उपासना, ब्रह्मयज्ञ-संध्या, अग्निहोत्र (यज्ञ) आदि के विषय में प्रशिक्षण दिया गया।

शिविरार्थियों हेतु पूरे सात दिन भोजन, आवास व्यवस्था विद्यालय में की गयी। 1 जून को सायंकाल 6 बजे सैक्टर 15 क्षेत्र की गलियों में आर्यवीरों द्वारा पदसंचलन तथा मिनी शोभायात्रा भी निकाली गयी। वेदप्रचार रथ, आर्यवीरों के व्यायाम प्रदर्शन आदि से सैक्टर 15 क्षेत्र के निवासीगण काफी प्रभावित हुए। 10 जून को प्रात: आठ बजे वृहद् यज्ञ के साथ शिविर का समापन समारोह आरम्भ हुआ। सचिव सुदर्शन आर्य के भजन तथा आर्यवीरों की प्रेरणार्थ मनोहरलाल के भजन से कार्यक्रम आरम्भ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात वैदिक प्रवक्ता डॉ0 सत्यवीर वेदालंकार (सैक्टर 23) ने की। आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के यशस्वी प्रधान रामपाल दहिया तथा प्रान्तीय वेदप्रचार अधिष्ठाता रमेश आर्य का भी समारोह में सान्निध्य और आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध समाजसेवी तथा व्यवसायी मुकेश रावत, विशिष्ट अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध समाजसेवी अशोक खत्री, डीएवी स्कूल के प्राचार्य विवेक मित्तल, पूर्व मण्डलपति नित्यप्रिय आर्य, आर्य समाज बेगा के यशस्वी प्रधान, अनुभवी वयोवृद्ध कवंल नैन, दयानन्द प्रतिनिधि सभा के जवाहरलाल बत्रा, सरस्वती सी0 सै0 स्कूल, कबीरपुर के शिक्षाविद् रामफल ढुल, रेवली पाणिनी महाविद्यालय के यशस्वी आचार्य प्रदीप ने समापन समारोह में शिविरार्थियों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दीं एवं शिविर के आयोजन हेतु सत्प्रयासों की प्रशंसा की।


।। ओ३म् ।।

## उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

**दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़**

आध्यात्मिक ज्ञान–विज्ञान–पिपासु, समाधि, वैराग्य, तत्वज्ञान के अभिलाषी, आत्मकल्याण के इच्छुक, अध्ययन– स्वाध्याय–प्रेमी, भद्रशील महानुभावों !

आपके प्रिय दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़ में योगाभ्यास के पथ पर आरोहण, प्रगति, सफलता, अन्तःकरण की परिशुद्धि ऐहिक सुख–शान्ति एवं आत्मा व परमात्मा की प्राप्ति हेतु वैदिक दर्शनों के आधार पर भाद्रपद शु. 9 से भाद्रपद शु. 14/2075 तदनुसार 18 सितंबर से 23 सितंबर 2018 तक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अध्यक्षता में छः दिन का उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है।

आप इस पुनीत अवसर को अपने जीवन से सम्बद्ध करें। इसमें मुख्य रूप में उच्च स्तर के साधक साधिकाएं भाग लेगें। शिविर में विशेष रूप से वेद, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण, विवेक–वैराग्य, समाधि की प्राप्ति हेतु निदिध्यासन आदि के रूप में अनेक वैज्ञानिक विधियों एवं उपायों का परिज्ञान कराया जायेगा। इसके साथ सूक्ष्म व उच्च आध्यात्मिक स्तर की वृद्धि हेतु आंशिक रूप में दर्शनों का अध्ययन भी कराया जायेगा। यम–नियम, धारणा–ध्यान–समाधि, ईश्वर समर्पण, अविद्या आदि क्लेश निवारण जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर मार्गदर्शन किया जायेगा।

शिविरार्थी 18 सितम्बर को सांयकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें। शिविर का समापन 23 सितम्बर के मध्याह्न में लगभग 1 बजे होगा। शिविर की दिनचर्या प्रातः 4:00 बजे से रात्रि 9:30 बजे तक रहेगी।

प्रत्येक शिविरार्थी से निम्नलिखित बातें अनिवार्यतया अपेक्षित रहेंगी।

1. पूरे शिविरकाल में सामान्य रूप से मौन रहना होगा।
2. आर्यवन परिसर में कम से कम दो बार क्रियात्मक योग शिविर में भाग लिया हो अथवा सघन साधना शिविर में कम से कम एक माह भाग लिया हो अथवा यहाँ के स्नातकों के द्वारा संचालित योग शिविरों में एक बार और आर्यवन के क्रियात्मक योग शिविर में एक बार भाग लिया हो।
3. शिविरार्थी को शिविर काल में चलभाष प्रयोग करने की अनुमति नहीं मिलेगी, चलभाष कार्यालय में जमा कराना होगा।
4. शिविरार्थी स्वस्थ एवं दिनचर्या पालन में समर्थ हो, रोगी न हो।
5. भोजनादि शुल्क (शिविर शुल्क) 1500/–रुपये निर्धारित किया गया है। आवास व्यवस्था सीमित होने आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिये जायेंगे तथा प्रथम आवेदकों को प्राथमिकता दी जायेगी।
6. पुरुष और माताओं/बहनों की पृथक–पृथक व्यवस्था होगी।
7. 50वर्ष से अधिक अवस्था वाली माताओं/बहनों को शिविर में प्रवेश दिया जायेगा।
8. शिविर काल में शिविर स्थल से बाहर जाना निषिद्ध रहेगा।

शिविर में भाग लेने के इच्छुक सज्जन 3 सितम्बर से पूर्व अपना विवरण ई–मेल, डाक से अथवा हमारी वेबसाइट darshanyog.org से प्रेषित करें और स्वीकृति प्राप्त होने पर शिविर शुल्क राशि जमा करावें।

**आवेदन और शिविर शुल्क जमा करने हेतु सम्पर्क सूत्र –**

**दर्शन योग महाविद्यालय** आर्यवन रोजड़, पत्रा – सागपुर,ता. – तलोद, साबरकांठा गुजरात 383307, मोबाइल :– 9409415011, 9409415017

# स्वतन्त्रता सेनानी, आर्य सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द का जन्मोत्सव

## आदर्शों को जीवन में उतारने का लिया संकल्प

प्रवीण आर्य
साहिबाबाद (उ.प्र.)

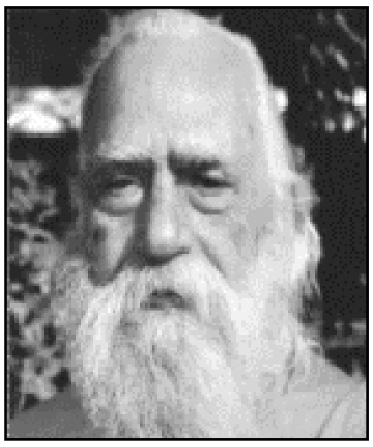

आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, स्वतन्त्रता सेनानी, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव 14 जून को समर्पण शोध संस्थान, राजेन्द्र नगर में सौल्लास मनाया गया। समारोह में गाजियाबाद व दिल्ली क्षेत्र के आर्य समाजों के कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी दीक्षानन्द जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे,उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है, हमें उनके बताये रास्ते पर चल कर वेदों का प्रचार प्रसार करना है। वेदों का ज्ञान ही विश्व को सच्ची शान्ति का मार्ग दे सकता है क्योंकि वेद का ज्ञान मानव मात्र के कल्याण के लिए है। उनका देश व समाज को समर्पित जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है, आज हमें उनके बताये आदर्शो पर चलने का संकल्प लेना चाहिये।

मुख्य यजमान आर्य नेता दर्शन अग्निहोत्री ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी अत्यन्त सौम्य स्वभाव वाले व्यक्ति थे,उनका आर्य समाज के हर कार्यक्रम में आशीर्वाद मिलता रहता था। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वामी जी के बताये रास्ते का अनुसरण करने का प्रण लें,देश व समाज के लिए कुछ करने की उमंग पैदा करें।

आर्य प्रतिनिधि उपसभा गाजियाबाद के प्रधान श्रद्धानन्द शर्मा ने कहा कि स्वामी जी से प्रेरणा लेकर समाज को सही रास्ता दिखाएं तभी स्वामी जी को याद करना सार्थक होगा। उन्होंने कहा कि स्वामी जी वैदिक साहित्य पर अन्तिम समय तक स्वाध्याय व लेखन का कार्य करते रहे,उनके प्रकाशन कार्य को तीव्र गति से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

वैदिक विद्वान डॉ. गणेशदत शर्मा ने राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं में आर्य समाज को अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया, उन्होंने कहा कि राष्ट्र रहेगा तभी धर्म रहेगा। वैदिक विदुषी प्रेमलता भटनागर ने अपने दैनिक जीवन को पवित्र, यज्ञमय व संकल्पवान बनाने का आह्वान किया।

आर्य नेता प्रवीन आर्य ने कहा कि स्वामी जी राष्ट्र के सजक प्रहरी थे,उनका जीवन युवा पीढ़ी के लिए सदैव प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहेगा। युवा नेता राकेश भटनागर ने कहा कि स्वामी जी ने यज्ञिय भावना का प्रचार प्रसार किया हमें भी अपना दैनिक जीवन यज्ञमय बनाना चाहिए। युवा गायक सुकृति व अविरल माथुर ने अपने मधुर भजनों से समां बांध दिया।

इस अवसर पर आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, रमेश भटनागर, सत्यवीर चौधरी, सुरेश आर्य, सुनील गर्ग, आर्य नेत्री सरोज अग्निहोत्री, के.के. यादव, हर्ष बवेजा आदि उपस्थित थे।

## आगामी कार्यक्रम

**१ अगस्त २०१८ :-** आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति द्वारा शहीद कपिल यादव की शहादत पर मालीपुरा (अमरोहा) में राष्ट्रभृत यज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह।

**८ से १२ अगस्त :-** आर्य समाज, लारसोठ, गंगापुर सिटी (राज0) का वार्षिकोत्सव। आमंत्रित विद्वान- शिवकुमार शास्त्री (सहारनपुर), प्रदीप शर्मा भजनोपदेशक, संरक्षक- पं0 मदन मोहन।

**१२ से २२ अगस्त :-** नवां चतुर्वेद पारायण यज्ञ, श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल के आचार्य विकास तिवारी के ब्रह्मत्व में लाल मंदिर आश्रम ब्रजघाट (हापुड़) में सम्पन्न होगा।

**१६ से १८ नवम्बर २०१८ :-** परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में भव्य ऋषि मेले का आयोजन।

काव्य संग्रह अन्तर्वेदना का विमोचन करते नवगीतकार डॉ. माहेश्वर तिवारी, डॉ. रीता एवं अन्य- केसरी

# समारोह पूर्वक हुआ 'अन्तर्वेदना' काव्य संग्रह का विमोचन

**मुरादाबाद (उ0प्र0)।** डॉ0 रीता, असिस्टेंट प्रोफेसर , एन के बी एम जी पी जी कॉलेज, चंदौसी के प्रथम काव्य संग्रह 'अन्तर्वेदना' का विमोचन मुरादाबाद के स्वतंत्रता सेनानी भवन, में कार्यक्रम अध्यक्ष परम श्रद्धेय यश भारती दादा माहेश्वर तिवारी, मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य डॉ0 जयपाल सिंह व्यस्त , विशिष्ट अतिथि मशहूर शायर मंसूर उस्मानी, सीए दीपक बाबू, डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी, डॉ. बीना रुस्तगी व कार्यक्रम संयोजक डॉ. पंकज दर्पण अग्रवाल के कर कमलों से हुआ। विमोचन समारोह में नवगीतकार योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' ने पुस्तक की प्रोत्साहनपूर्ण व मार्गदर्शन करती समीक्षा करते हुए उपस्थित पाठकों को पुस्तक से परिचित कराया। स्थानीय कवयित्री हेमा तिवारी भट्ट, कवि राजीव प्रखर, अखिलेश वर्मा, डॉ. ममता सिंह, डॉ. सुगंधा अग्रवाल, डॉ. टी एस पाल (चंदौसी), राजेश कुमार (धामपुर) ने पुस्तक की सुंदर व सार्थक समीक्षा की व श्रोताओं को 'अन्तर्वेदना' की रचनाओं से रूबरू कराया। कार्यक्रम का साहित्यिक संचालन डॉ. अर्चना गुप्ता जी द्वारा किया गया।

इस आयोजन में बरेली, रामपुर, अमरोहा, चंदौसी, धामपुर, रुड़की आदि विभिन्न नगरों से आये साहित्य प्रेमी भी उपस्थित रहे।

# ईश्वर का सही रूप न जान पाना ही पाखंडों का आधार- शोभाराम आर्य

**अरविन्द पाण्डेय**
**कोटा (राजस्थान)**

आर्य समाज भीमगंजमंडी के सत्संग में डी.ए.वी. कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने अपने उद्बोधन में ईश्वर के मुख्य नाम ओम् पर चर्चा की। वेद, उपनिषद् आदि धार्मिक ग्रंथों के उद्धरण देते हुए ईश्वर का मुख्य नाम 'ओम्' बताया गया। अ, उ, म इन तीन वर्णो एवं अव धातु से ओम् शब्द सिद्ध होता है। ईश्वर वर्णो में 'अ' की तरह है जो सभी वर्णो में होता है पर नजर आता नही। जबकि सभी वर्ण 'अ' से ही पूर्णता को प्राप्त होते हैं। ऐसे ही परमात्मा ने सर्व संसार को बनाया है और अपने आप को छिपाया है। वह सबका आधार है फिर भी निराकार है। जनसामान्य की समस्या यह है कि वह वेद आधारित इस ज्ञान से प्रतिकूल जाकर अन्य बातों पर विश्वास करता है अतः वह पाखंडों का शिकार बन जाता है। सभी पाखण्डों से बचने का एक ही मार्ग है वह है ईश्वर के सही रूप का ज्ञान। कार्यक्रम में आर्य समाज जिला कोटा की तरफ से आर्य समाज भीमगंजमण्डी के नवनिर्वाचित प्रधान गिरिराज सिंह चौधरी, मंत्री देवेन्द्र सक्सेना एवं कोषाध्यक्ष मनोज गुप्ता तथा पूर्व प्रधान प्रेमनाथ कौशल को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। साथ ही जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई देते हुए कहा कि यह कार्यकारिणी पूर्व की भांति जिला सभा के रचनात्मक कार्यो में सहयोग प्रदान करती रहेगी तथा महर्षि दयानंद के मिशन को जनजन तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभायेगी।

कार्यकम का संचालन प्रेमनाथ कौशल ने किया। इस कार्यकम में आर्यसमाज भीमगंजमंडी के सभासदों के साथ महावीर नगर आर्यसमाज के प्रधान आर.सी. आर्य, अमन चड्ढा, तथा अन्य जन उपस्थित थे।

## आर्यसमाज, कोटा

### दयानन्द नगर, तलवंडी

### का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

**प्रधान**- गुमान सिंह आर्य
**मंत्री**- मुनीश आर्य
**कोषाध्यक्ष**- मनु शर्मा
**उप प्रधान (पुरुष)**- मैरूलाल शर्मा
**उप प्रधान (महिला)**- नीरा सक्सैना
**उपमंत्री (पु.)**- नगेन्द्र सिंह कर्णावत
**उपमंत्री (म.)**- उषा भटनागर
**आर्यवीर दल अधि.**- कुलदीप सुमन
**पुस्तकालयाध्यक्ष**- वीरेश आर्य

आर्यसमाज, तलवण्डी (कोटा) के वार्षिक निर्वाचन में चुने गये पदाधिकारीगण- केसरी

## आर्यत्व के प्रतीक
# पं. महेन्द्र कुमार आर्य
सूरजपुर (ग्रेटर नोएडा)

राजार्य सभा गौतमबुद्ध नगर तथा आर्यसमाज, सूरजपुर (ग्रेटर नोएडा) के प्रधान पं. महेन्द्र कुमार आर्य आर्यत्व के प्रति समर्पित हैं। वे एक प्रतिष्ठित व्यापारी के साथ ही आर्य समाज, वैदिक संस्कृति तथा सभ्यता के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। आपने अपने पैतृक नगर सूरजपुर में महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय की कई वर्षों पूर्व स्थापना की है। किसान परिवार में जन्मे श्री आर्य जी अब तक सैंकड़ों की संख्या में ऋषि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का निशुल्क वितरण कर चुके हैं। आपने मानव कल्याण निधि के नाम से एक उत्कृष्ट पुस्तक की रचना की है जिसमें आर्य समाज की मान्यताएं, सौलह संस्कार, नशा नाश का साधन, वेदोत्पत्ति और सृष्टिकाल, ईश्वर का स्वरूप, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द आदि विषयों पर सारगर्भित विचार समाहित किये हैं। आप अत्यन्त सरल, सहज एवं उदार हृदय हैं। आर्यसमाज के सिद्धान्तों से वो कभी समझौता नहीं करते। आपका जीवन पंच महायज्ञों से ओतप्रोत है। हम आर्य जी के सुखमय जीवन, सुस्वास्थ्य तथा दीर्घायुष्य की प्रभु से मंगल कामना करते हैं।

नियमित कॉलम
# ऐसे होते हैं आर्य

**सम्माननीय पाठकवृन्द!**

हम आपके प्रिय व वैदिक संस्कृति के संवाहक आर्यावर्त केसरी में **'ऐसे होते हैं आर्य'** नाम से एक नियमित कॉलम प्रकाशित किया जा रहा है। अतः प्रबुद्ध आर्यजनों से निवेदन है कि ऐसे श्रेष्ठ महानुभावों, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठायी है व समाज हित में अच्छे कार्य किये हैं, जिनसे कि आमजन प्रेरणा ले सकें, से सम्बन्धित जानकारी, उनके नाम व पते तथा एक रंगीन पासपोर्ट साइज़ फोटो सहित भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

**-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,**
**निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा-२४४२२१ (उ.प्र.)**
**मोबा. : 9412139333**

# योग भगाए रोग
## रीढ़ की समस्याओं से दूर रखता है

### ताड़ासन

विधि :–

1. सबसे पहले अपने पैरों की मद्द से सीधे खड़े हों।

2. अपने दोनों पैरों के बीच थोड़ा सा जगह बनायें।

3. उसके बाद एक लम्बी साँस के साथ अपने पैरों की उँगलियों की मदद से शरीर को थोड़ा ऊपर उठायें और अपने दोनों हांथों को धीरे-धीरे उपर उठायें। उसके बाद अपने एक हाँथ की उँगलियों से दूसरी हाँथ के उँगलियों को जोड़ें।

4. कम से कम १५-३० सैकेंड इस मुद्रा में रहें और अपने शरीर को ऊपर की ओर खीचें।

5. उसके बाद धीरे-धीरे अपने हांथों को सामान्य स्तिथि में ले आयें।

लाभ :–

1. यह आसन उन लोगों के लिए ज्यादा फायदेमंद साबित होता है जो अपना लम्बाई बढ़ाना चाहते हैं।

2. मुद्रा में सुधार होता है।

3. रीढ़ की समस्याओं से दूर रखता है।

### आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जाएगी। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। -सम्पादक

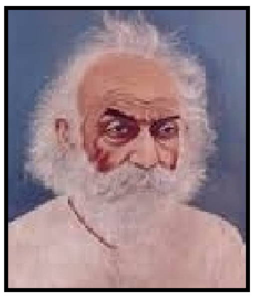

## हमारी महान विभूतियां
# प्रखर राष्ट्रचेता
# भारतरत्न राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन

1882 : 1 अगस्त, इलाहाबाद में जन्म।
1897 : नरोत्तमदास खन्ना (मुरादाबाद नगर निवासी) की सुपुत्री चन्द्रमुखी देवी के साथ विवाह।
1899 : कांग्रेस के स्वयंसेवक बने।
1905 : बंगभंग आन्दोलन में सहभागिता।
1905 : गोपाल कृष्ण गोखले के अंगरक्षक बने।
1906 : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधि चुने गये।
1906 : एल0एल0बी0।
1907 : एम0ए0 (इतिहास)।
1908 : हाईकोर्ट में सर तेजबहादुर सप्रू के साथ वकालत।
1909 : 'अभ्युदय' साप्ताहिक पत्र के सम्पादक।
1910 : 10 अक्टूबर को हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना। 'मर्यादा' मासिक पत्रिका के संपादक।
1918 : 22 दिसम्बर हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग की स्थापना।
1919 : इलाहाबाद म्युनिसिपैलिटी बोर्ड के चेयरमैन।
1920 : पटना में अ.भ. हिन्दी साहित्य सम्मेलन करवाया।
1920 : असहयोग आन्दोलन में वकालत छोड़ी।
1921 : सत्याग्रह आन्दोलन में 18 माह का कारावास।
1921 : इलाहाबाद में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई।
1921 : नमक का परित्याग।
1923 : पुनः म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन नियुक्त हुए।
1923 : उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष।
1925 : पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर पद पर नियुक्त।
1926 : 'सर्वेण्ट्स ऑफ पीपुल्स सोसायटी' के सदस्य।
1929 : लोक सेवा मण्डल के अध्यक्ष।
1931 : 29 दिसम्बर को पुनः गिरफ्तार।
1932 : सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया।
1932 : गोरखपुर जेल में बन्द किये गये।
1936 : नयी प्रान्तीय धारासभाओं के चुनाव में प्रयाग से निर्विरोध चुने गये।
1936 : हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नागपुर अधिवेशन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना।
1937 : सर्वसम्मति से विधानसभा के अध्यक्ष चुने गये।
1941 : 2 अप्रैल को बन्दी बनाकर नैनी जेल फिर फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल में 8 माह नजरबन्द रहे। यह उनकी चौथी जेलयात्रा थी।
1944 : 'सत्यार्थ प्रकाश' पर लगे प्रतिबंध विरोध किया।
1946 : प्रान्तीय विधानसभा के पुनः अध्यक्ष चुने गये।
1948 : उत्तर प्रदेश कांग्रेस के पुनः अध्यक्ष चुने गये।
1948 : संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य चुने गये।
1949 : टण्डन जी के प्रयासों के कारण संविधान सभा ने देवनागरी लिपि एवं हिन्दी को मान्यता दी।
1950 : नासिक कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष मनोनीत हुए।
1952 : इलाहाबाद से लोकसभा के सदस्य चुने गये।
1956 : उत्तर प्रदेश से राज्यसभा के लिए चुने गये।
1961 : 26 अप्रैल, भारत सरकार द्वारा देश की सर्वोच्च उपाधि भारतरत्न से विभूषित किया गया।
1962 : 1 जुलाई को प्रातः 10 बजकर 5 मिनट पर प्रयाग में पंचतत्व में विलीन।

# कार्यालय नगर पंचायत जोया, जनपद अमरोहा

**पत्रांक :** 253/ न0प0 जोया/ 2018 **दिनांक :** 18.07.2018

## सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत जोया, जनपद अमरोहा द्वारा स्वच्छ भारत मिशन (अर्बन) के अंतर्गत निम्न वार्डों की सूची के अनुसार नगर के सम्मानित नागरिकों, स्कूल/ कॉलेज के छात्र/ छात्राओं के प्रयासों से खुले में शौच की प्रथा को समाप्त समाप्त करते हुए नगर पंचायत जोया के 12 वार्डों को खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) घोषित करते हुए शासन को प्रस्ताव प्रेषित किया जाना है। निम्न वार्डों को खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) से संबन्धित यदि किसी व्यक्ति का कोई सुझाव/ आपत्ति हो, तो इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने के 15 दिवस के अन्दर-2 अपनी आपत्ति/ सुझाव कार्यालय नगरपंचायत जोया, जनपद अमरोहा में किसी भी कार्यदिवस में लिखित रूप में दे सकते हैं।

मोबाइल नम्बर : 9457636388, 9720751721; दूरभाष : 05922-246039
मेल आईडी : Npjoya8@gmail.com, Mobinhasan8@gmail.com

**नगर पंचायत जोया के अन्तर्गत खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) वार्डों का विवरण**

| क्र० सं० | वार्ड संख्या | वार्ड का नाम | अभ्युक्ति |
|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 |
| 1 | 1 | जाटव कालोनी | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 2 | 2 | चौधरीयान | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 3 | 3 | चौकीदारान | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 4 | 4 | मुंशियान | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 5 | 5 | खेड़ा | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 6 | 6 | मुल्लाना | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 7 | 7 | पधानोंवाला | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 8 | 8 | इकबालनगर प्रथम | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 9 | 9 | इकबालनगर द्वितीय | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 10 | 10 | जोई प्रथम | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 11 | 11 | जोई द्वितीय | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |
| 12 | 12 | जामा मस्जिद | खुले में शौच से मुक्त (ओ0डी0एफ0) किया जा चुका है। |

(नदीम अख्तर)
डीपीएम (एसबीएम)
अमरोहा

(राजीव कुमार)
अधिशासी अधिकारी
नगरपंचायत जोया

(जाहिद हुसैन एडवोकेट)
स्वच्छता प्रेरक (एसबीएम)
नगरपंचायत जोया

(नाजमा खातून)
अध्यक्ष
नगरपंचायत जोया

# अंधविश्वास व पाखण्ड फैलाने वालों पर हो सख्त कार्यवाही

## टोने-टोटके करनें वालों के विरोध में आर्य समाज ने दिया ज्ञापन

**कोटा।** जिले के प्रमुख सरकारी अस्पतालों में आत्मा ले जाने के नाम पर होने वाले टोने-टोटके एवं तंत्र-मंत्र को रोकने तथा ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने की मांग को लेकर आर्य समाज ने जिला कलेक्टर गौरव गोयल को ज्ञापन सौंपा, जिस पर उन्होंने यथोचित कार्यवाही का आश्वासन दिया।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता चैयरमेन कृष्णा ब्लड बैंक, प्रेमनाथ कौशल, प्रभुसिंह कुशवाह तथा वेदमित्र वैदिक आदि ने जिला कलेक्टर से मिलकर ऐसे अंधविश्वास, पाखण्ड एवं तंत्र-मंत्र को बढावा देने वाले तांत्रिकों, भोपों तथा इस प्रथा के कृत्य में शामिल लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने की मांग की। कोटा के प्रमुख समाचार पत्रों में कई बार प्रकाशित खबरों को आधार बनाकर आर्य समाज ने इस प्रकार के कृत्य के समय मौजूद चिकित्साकर्मियों एवं सुरक्षाकर्मियों के उदासीन व्यवहार को अंधविश्वास निरोध कानून का खुला

जिलाधिकारी को ज्ञापन देते प्रधान अर्जुन देव चड्ढा व अन्य- केसरी

उल्लंघन मान भविष्य के लिए पाबंद करने की मांग की है। इस अवसर पर जिला कलेक्टर से नगर के एमबीएस हॉस्पिटल, जेके लॉन तथा मेडिकल कॉलेज में इस प्रकार के कार्य रोकने के लिए चेतावनी बोर्ड लगाने का निवेदन किया गया।

ज्ञापन देने के इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि वर्ष 2018 को सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा अंधविश्वास निवारण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

## निराश्रित बच्चों के साथ मनाया जन्मदिन- उपहार पाकर बच्चे हुए खुश

रंगबाड़ी, कोटा स्थित मधुस्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के मध्य डी.ए.वी. कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने अपना 49वाँ जन्मदिन मनाया। बच्चों ने गायत्री मंत्र का सस्वर पाठ एवं भजन गायन किया। जिला आर्यसमाज के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर.सी. आर्य एवं डॉ. अंजलि निर्भीक ने जन्मदिन की बधाई दी।

(अरविंद पाण्डेय- 9460494654)

स्वनामधन्य- आर्यरत्न, तपोनिष्ठ

# महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य

### जन्मशती वर्ष : 25 दिसम्बर 2017-18

## स्मारिका का भव्य प्रकाशन

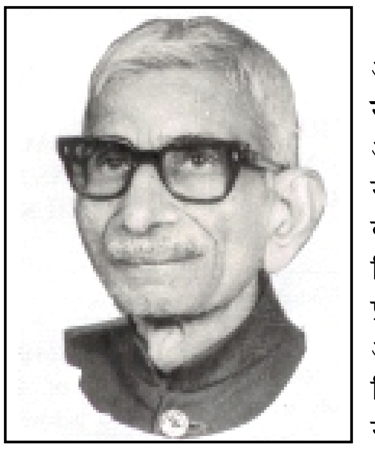

स्वनामधन्य उदारमना, आर्यरत्न, प्रखर समाजसेवी **महाशय सत्यप्रकाश जी आर्य** आजीवन आर्यसमाज, गुरुकुल तथा वैदिक संस्थाओं के प्रति समर्पित रहे। वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द के मिशन व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए उनका योगदान अतुलनीय रहा। वे आर्यसमाज के लिए सर्वस्व समर्पित करने के लिए सदैव उद्यत रहते थे। **उनको केवल एक ही चिन्ता थी कि आर्य समाज का प्रसार अधिक से अधिक कैसे हो।**

हम सभी के लिए यह गौरव की बात है कि **२५ दिसम्बर २०१७-१८** पूज्य महाशय जी का जन्मशती वर्ष है। इस पुनीत अवसर पर **आर्यावर्त प्रकाशन** द्वारा बड़े स्तर पर एक **भव्य एवं यादगार स्मारिका** का प्रकाशन किया जाएगा, ताकि वर्तमान तथा आगे आने वाली संततियाँ महाशय जी जैसे महामानवों के प्रति गर्व कर सकें। निश्चय ही ऐसी देवतुल्य विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से राष्ट्र व समाज को एक रचनात्मक दिशा मिलती है। विश्वास है कि यह स्मारिका इस दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी। बड़ी प्रसन्नता है कि महाशय जी के सुपुत्र प्रिय भ्राताश्री **विनय प्रकाश जी आर्य** एवं **पौत्र अभय आर्य** आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त प्रकाशन एवं आर्य समाज के मिशन के लिए निरन्तर सहयोग प्रदान करते रहते हैं। उनके सहयोग से जनहितकारी तथा आत्मकल्याणकारी उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन भी किया जाता रहता है।

महाशय जी से जुड़े विद्वान लेखकों तथा आर्यसमाज एवं समाज के विभिन्न घटकों, संस्थानों से जुड़े विज्ञ महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपनी सशक्त लेखनी से महाशय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने लेख, संस्मरण तथा रचनाएं आदि यथाशीघ्र प्रकाशनार्थ भेजें। धन्यवाद,

**-: निवेदक :-**

| | | |
|---|---|---|
| **हरिश्चन्द्र आर्य**<br>मार्गदर्शक | **विनय प्रकाश आर्य- अंजु आर्या**<br>संयोजक | **डॉ. अशोक आर्य**<br>सम्पादक |
| **उषा आर्या**<br>मुख्य संयोजक | **अभय आर्य- तूलिका आर्या**<br>अतिथि सम्पादक | **डॉ. बीना रुस्तगी**<br>प्रबन्ध सम्पादक |

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

# 'सत्यार्थ प्रकाश'

**के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना**

● **पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प**

**विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद**

### ।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियां में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

### : प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

**पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221**
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

## सत्यार्थ प्रकाश

का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित

साइज़ - 18 x 23 x 8

मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ

# कैसा हो व्यवहार हमारा

वर्तमान भौतिकतावादी युग में जब मनुष्य तथाकथित विकास की अंधी दौड़ की आपाधापी में बड़ी तीव्र गति से अध्यात्म के शिखर से लुढ़कता हुआ अधोगति की ओर फिसलता जा रहा है, ऐसे में कैसे दूसरे को पीछे कर आगे निकल जाऊं, इसी दौड़ में दूसरे के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो, पूरी तरह भूल चुका है। यदि स्पष्ट रूप से कहें तो आज मनुष्य का आपसी व्यवहार भी व्यापार बन चुका है। यदि किसी को किसी से कुछ निजी स्वार्थ का काम है तो उसका व्यवहार एकदम चाशनी की भांति मीठा हो जाता है, और यदि कोई काम नहीं है तो व्यवहार रूखा–सूखा कर्कश। इसी स्वार्थाधारित व्यवहार ने रिश्तों को भी स्वार्थी बना दिया है। प्रश्न उठता है कि हमारा व्यवहार दूसरों के प्रति कैसा हो, अर्थात् हमें औरों से कैसा बर्ताव करना चाहिए। महर्षि देव दयानन्द ने आर्य समाज के सातवें नियम में इस बारे में बहुत ही स्पष्ट निर्देश दिया है– ''हमें सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए''। अर्थात् एक व्यक्ति के दूसरे से व्यवहार के लिए तीन अनिवार्य सावधानियां देव दयानन्द ने बताई। प्रथम– प्रीतिपूर्वक, दूसरा– धर्मानुसार और तीसरा– यथायोग्य। अब तीनों अनिवार्य शर्तों को समझना आवश्यक है। तीनों का यौगिक अर्थ जाने बिना इन पर आचरण कर पाना संभव नहीं है। वैसे भी आज की दौड़ती भागती जिंदगी में हमने हर शब्द का अपने स्वार्थ के अनुरूप संकुचित अर्थ करके अनर्थ कर दिया है। प्रीति व प्रेम का सर्वाधिक दुरूपयोग वर्तमान काल में हो रहा है। प्रेम व प्रीति के यौगिक अर्थ को संकुचित करते करते हमने इसे विपरीत लिंगों के वासनात्मक आकर्षण तक सीमित कर दिया है। जबकि प्रेम का तो बहुत विस्तृत अर्थ है गुरू–शिष्य, पिता–पुत्र, मां–बेटे, पिता–पुत्री, मां–बेटी, भाई–बहन जैसे प्रगाढ़ संबंधों में प्रेम या प्रीति इन रिश्तों के अटूट बंधन के लिए आवश्यक है। प्रेम की अनुपम परिभाषा अथर्ववेद के तीसरे काण्ड के 30वें सूक्त के पहले मंत्र में दी है– अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या।।

अर्थात् एक मनुष्य अन्य दूसरे मनुष्य के साथ (अभिहर्यत) ऐसा व्यवहार करे (इव) जैसे (अध्न्या) गाय (जातम्) नवजात (वत्सम्) बछड़े के साथ करती है। प्रेम व प्रीति का इससे अधिक सुंदर उदाहरण शायद कहीं भी देखने को नहीं मिलता। गाय अपनी जीभ से अपने नवजात बछड़े के शरीर से मल छुड़ाकर उसे साफ कर देती है और फिर अपना दुग्धपान करवाती है। इससे स्पष्ट निर्देश मिलता है कि प्रीतिपूर्वक व्यवहार में हमें दूसरों के दोश छुड़वाकर उनमें सद्गुण भरने हैं यही है दूसरों के साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार, न कि किसी शराबी के साथ बैठकर शराब के जाम लगाना अपितु शराब छुड़वाकर अमृत की भांति दुग्धपान करवाना प्रीति या प्रेम पूर्वक व्यवहार की श्रेणी में आता है।

धर्मानुसार व्यवहार में कैसे हमारा आचरण दूसरों के प्रति धर्मानुकूल हो यह जानना अत्यंत आवश्यक है तो इसके लिए सरलतम उपाय है कि जैसा व्यवहार हम अपने जीवन में दूसरों से अपने लिए अपेक्षित करते हैं वैसा ही व्यवहार हम स्वयं उस स्थिति में दूसरों के साथ किया करें। महर्षि देव दयानन्द ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में मनुष्य को परिभाषित करते हुए स्व आत्मवत् व्यवहार को मनुष्य के लिए अनिवार्य गुणों में रखा है। जैसा हम अपने जीवन में दूसरों से व्यवहार चाहते है यदि वैसा दूसरों के साथ करें तो व्यवहार संबंधी कोई समस्या पैदा नहीं होती। अपने कार्यालय में बैठकर अपने पद की शक्तियों का उपयोग करते समय यदि सामने फाइल लेकर खड़े व्यक्ति के साथ व्यवहार करने से पूर्व यदि एक पल के लिए हम स्वयं को उसके स्थान पर खड़ा करके सोचें और फिर जैसा व्यवहार उस स्थिति में हम अपने लिए अपेक्षित करते हों वैसा व्यवहार हम उस समय सामने खड़े व्यक्ति के साथ करें। यदि स्वआत्मवत व्यवहार के धर्मानुसार आचरण को हम अपनी जीवन शैली बना लें तो निश्चित रूप से जीवन में अपने व्यवहार के कारण सफल हो सकते हैं।

यथायोग्य व्यवहार स्व आत्मवत् व्यवहार का विस्तार है अर्थात् जैसा जिसके लिए अपेक्षित व योग्य हो। यह अंग्रेजी के 'टिट फॉर टैट' अर्थात् जैसे को तैसा से भिन्न है। इसमें क्रिया की प्रतिक्रिया नहीं आती अपितु जो जैसा है उसको वैसा योग्य उचित व्यवहार आता है। अर्थात् दोषी अपराधी को उचित दंड और निर्बल धर्मात्माओं को संरक्षण सत्कार इसी यथायोग्य व्यवहार की श्रेणी में आता है। इस प्रकार यदि हम सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करेंगे तो निश्चित रूप से जीवन में सफलता के सोपान चढ़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पायेंगे।

अतिथि सम्पादकीय– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक', 502 जी एच 27, सैक्टर 20 पंचकूला, मोबा. : 09467608686

# सब को अनिवार्य शिक्षा ही वेदादेश

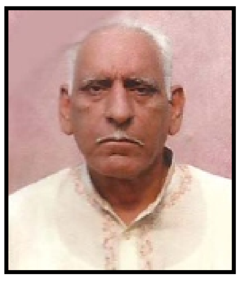

डॉ. अशोक आर्य

भारत प्राचीन काल से ही उत्तम शिक्षा का केंद्र रहा है। विश्व का विद्यार्थी वर्ग यहाँ शिक्षा प्राप्ति के लिए आता था। इससे स्पष्ट होता है कि यहाँ की शिक्षा व्यवस्था उतामोतम होती थी। शिक्षा के इस उच्च सत्र तथा विदेशियों की मांग के कारण इस देश को विश्व गुरु का स्थान प्राप्त था। इस सब का कारण इस देश के लोगों का वेदानुगामी होना था और वेद में शिक्षा को अनिवार्य रखने का आदेश दिया है। इस देश में प्राचीन काल तो क्या मुग़ल काल के आरम्भ तक निःशुल्क शिक्षा रही है। यह शिक्षा राजकीय व्यवस्था के आधीन कभी भी नहीं रही। यह राज्य के कार्य क्षेत्र से सदा दूर व स्वाधीन रही है। इस का कारण यह रहा कि शिक्षा की व्यवस्था का कार्य वानप्रस्थी व सन्यासी लोगों के हाथ में रहा। यह लोग परिजनों का त्याग कर, समाज के कल्याण के लिए घरों से निकलते तथा दूरस्थ क्षेत्रों में जा कर कहीं नदी के किनारे, पर्वतों की तलहटी में वीरान व जंगलों में जा कर गुरुकुलों की स्थापना करते थे। इन का तथा इन के शिष्यों का भरण पौषण भिक्षा पर ही होता था। इस कारण शिक्षा पर उन दिनों कुछ भी व्यय नहीं करना होता था तथा यह लोग अपने शिष्यों को जिस लगन से शिक्षा देते थे आज कल की सरकारी शिक्षा पद्धति अत्यधिक धन व्यय के बाद भी वैसी शिक्षा दे पाने में सक्षम नहीं है। आज का विद्यार्थी शिक्षा में निरंतर पिछड़ता जा रहा है। इस का कारण सरकारी हस्तक्षेप की अधिकता ही है। वेद ने शिक्षा का जो सब के लिए समान अधिकार दिया है, इस सम्बन्ध में ऋग्वेद का मन्त्र ६.५२.६ तथा यजुर्वेद का मन्त्र ३३.७७ और सामवेद का मन्त्र १५६५ बड़ा सुन्दर उपदेश करते हैं। उप नः सूनवो गिरः श्रृणवन्त्वमृतस्य ये। सुमृडीका भवन्तु नः।। ऋग ६.५२.६ यजु ३३.७७ साम १५६५।।

हम बता चुके हैं कि वेद ने राजा को प्रजा द्वारा सीधे चुनने का आदेश दिया है तथा वह स्वेच्छाचारी न हो कर कुछ सभा समितियों के आधीन कार्य करे, एसा आदेश भी दिया है। इस प्रकार वेद ने प्रजातांत्रिक पद्धति को ही उत्तम कहा है। भारतीय स्वाधीनता के पश्चात् बनाए गए संविधान में प्रजातांत्रिक पद्धति को तो अपनाया है किन्तु १८ वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले प्रत्येक प्रौढ़ को मताधिकार दे तो दिया किन्तु इसमें उसकी योग्यता का उल्लेख नहीं किया गया। इस कारण प्रत्येक अशिक्षित प्रौढ़ को भी मताधिकार मिल गया। यह अशिक्षित लोग राजनीतिक परिस्थितियों तथा प्रतिनिधि चुनने के लिए आवश्यक योग्यता को सही से नहीं समझ पाते और मताधिकार का दुरुपयोग कर देश की हानि का कारण बनते है। हमारा देश आज भी शिक्षा के वैदिक आदर्श से बहुत दूर है। इसलिए इस देश की शिक्षा की पुनर्स्थापना आवश्य है।

इस सम्बन्ध में मन्त्र कह रहा है कि :– हमारे बालक नाश रहित अमृत तुल्य तथा विद्या से युक्त वाणियों को जब सुनेंगे तो उतम व सुखदायी वातावरण बनेगा। इस का भावार्थ करते हुए अनिवार्य शिक्षा के सम्बन्ध में ऋषि दयानंद सरस्वती इस प्रकार कहते हैं :– माता पिता तथा अन्य पालक जनों को राजनीति और कुल में यह दृढ़ नियम बनाना चाहिए कि हमारी जो भी संतान हो, वह ब्रह्मचार्य द्वारा विद्या के ग्रहण के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत ग्रहण करें, जो इसका उल्लन्घन करे उसे राजा और कुलीन पुरुष बहुत दंड दें।

इस सब से यह तथ्य सामने आता है कि अच्छी शिक्षा वह बालक ही प्राप्त कर सकता है, जिस का ध्यान केवल और केवल शिक्षा में ही केन्द्रित हो। अपने ध्यान को एकाग्र व् मात्र शिक्षा में ही केन्द्रित करने के लिए आवश्यक है कि ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया जावे। बिना ब्रह्मचर्य के उत्तम शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती। ब्रह्मचार्य से ही शरीर की शक्ति की रक्षा होती है। जब विद्यार्थी रोग रहित रहते हुए शक्ति का पुंज होगा तब ही वह अपना पूरा समय शिक्षा को दे पावेगा, अन्यथा उसका ध्यान तो कक्षा में बैठे हुए भी विषयों में ही फंसा रहेगा, वह शिक्षा में तो ध्यान दे ही नहीं पावेगा तो फिर वह शिक्षा कैसे प्राप्त करेगा?

इस लिए स्वामी जी कहते हैं कि शिक्षा के आरम्भ में ही बालक को ब्रह्मचर्य का व्रत दिया जावे और जो विद्यार्थी इस व्रत का खंडन करे, उल्लंघन करे उसे दंड दिया जावे। जब एसा होगा तो विद्यार्थी के लिए उत्तम शिक्षा के दरवाजे खुल जावेंगे।

इस सम्बन्ध में मनुस्मृति के अध्याय सात के श्लोक संख्या १५२ में भी सुन्दर प्रकाश डालते हुए कहा है कि :– कन्यानां सम्प्रदानं च, कुमाराणां रक्षणम्। इस के आलोक में स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास ३ में इस प्रकार लिखते हैं कि "उसका अभिप्रायः यह है कि इसमें राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दंडनीय हो।"

प्राचीन भारत में सौ प्रतिशत शिक्षा थी। इस कारण वेद के सब आदेश का विधिवत पालन होता था। इस सम्बन्ध में एक प्रमाण रामायण से हमें मिलता है, इस पर हमें अत्यधिक गर्व है। बालमि की रामायण के काण्ड ६ के श्लोक आठ में इस प्रकार प्रकाश डाला गया है :– **कामी वा न कदर्यो वा, नृशंसः पुरुषः क्वचित/द्रष्टुं शक्यमयोध्यायाँ, नाविद्वान्...**

**वैशाली, गाजियाबाद**

## जनवाणी — यदि मुझे याद रखना चाहो तो

1. मेरी आंखें उस आदमी को दे देना, जिससे वह उगता सूरज देख सके, और खिलते फूल देख सके, नन्हें-मुन्ने बच्चों को देख सके।

2. मेरा खून उस नौजवान को दे देना, जिसने सीमा पर दुश्मन की गोलियों का सामना किया हो।

3. मेरा दिल उसे दे देना, जिसके दिल में दूसरों के प्रति संवेदना का भाव हो।

4. मेरे गुर्दे उसे दे देना, जिसकी जिन्दगी की अंतिम रातें अधर में लटकी हों।

5. मेरा मांस मेरे शरीर की हर हड्डी, हर रेशा, हर नाड़ी निकाल लो और उस अपाहिज को दो, जिससे वह सामान्य जीवन व्यतीत कर सके।

6. मेरे दिमाग का हर कोना खोज लो, जिससे कोई मानसिक रोगी स्वस्थ हो सके।

7. मेरे बचे-खुचे शरीर को जलाकर उसकी राख हवा में बिखेर देना, ताकि उस राख से खलिहान खिले।

8. मेरे पाप शैतान को दे देना।

9. मेरे सद्गुण परमात्मा को दे देना।

10. यदि मुझे याद रखना चाहो, तो किसी जरूरतमंद को दो मीठे बोल दे देना।

**संग्रहकर्ता– कृष्णमोहन गोयल, ११३, बाजार कोट, अमरोहा**

# योग साधना शिविर 16 से

**ऊधमपुर (जम्मू कश्मीर) (भारतभूषण)।** जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्द धाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक महात्मा चैतन्यस्वामी की अध्यक्षता एवं मां सत्यप्रिया यति जी के सान्निध्य में 16 से 23 सितम्बर तक निःशुल्क योग–ध्यान–साधना शिविर का आयोजन किया जायेगा, जिसमेंअनुभवी आचार्योंएवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में स्वामी वेदपति, अखिलेश भारतीय, स्वामी नित्यानन्द आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण–यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए मोबाइल नं0 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

## हार्दिक श्रद्धांजलि

### देवराज आर्यमित्र नहीं रहे

**दिल्ली।** आर्य समाज हरिनगर, घन्टाघर, दिल्ली के सदस्य, विद्वान लेखक, प्रचारक तथा पूर्व आर्य समाज, वल्लभगढ़ से संबन्धित, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के शिविरार्थी देवराज आर्यमित्र के आकस्मिक निधन पर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि दी गयी। उनके सुपुत्र राकेश आर्य ने अपने पिता के कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है।

### राजेश अग्रवाल को मातृशोक

**दढ़ियाल (हसनपुर) उ.प्र.।** आर्य समाज के निष्ठावान सभासद राजेश अग्रवाल की माता श्रीमती चन्द्रवती (92) का आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। वह एक धार्मिक तथा सरल स्वभाव की भद्र महिला थीं। वे अपने पीछे चार पुत्र, एक पुत्री तथा पौत्र–पौत्री आदि सहित भरापुरा परिवार छोड़ गयी हैं। हार्दिक श्रद्धांजलि।

### डॉ० ओमप्रकाश रुस्तगी दिवंगत

**दिल्ली।** दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान शिवकुमार मदान के समधी डॉ0 ओमप्रकाश रुस्तगी (बालरोग विशेषज्ञ) का 2 जून 2018 को 75 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। डॉ0 रुस्तगी आर्य समाज जनकपुरी सी 3 के सदस्य थे। वे एक अनुभवी व योग्य चिकित्सक थे तथा दूसरों की मदद करने के लिए सदा तत्पर रहते थे। डॉ0 रुस्तगी अपने पीछे धर्मपत्नी, 1 सुपुत्र व 1 सुपुत्री का भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। हार्दिक श्रद्धांजलि।

अष्टम् पुण्यतिथि

**हार्दिक श्रद्धांजलि**

**विशाल बत्ता (विशु)**

ऐ प्रभु ये कैसी नादानी हुई।
फूल ऐसा तोड़ा कि
गुलशन में वीरानी हुई।

स्व० विशाल बत्ता (विशु) पुत्र सुधीर बत्ता
और पौत्र आर०आर० बत्ता (आयु १८ वर्ष)
दिनांक- ०९ जून २०१० को बी०टेक० इंजीनियरिंग कोर्स के बारे में पता करने स्कूटर से जाते समय जिनकी एक सड़क दुर्घटना में असामयिक मृत्यु हो गयी।
आज केवल स्मृतियाँ ही शेष हैं। हार्दिक श्रद्धांजलि॥

-: शोकाकुल :-
आर०आर० बत्ता, विजय बत्ता, सुधीर बत्ता, मीरा बत्ता तथा सभी परिजन, सारे रिश्तेदार और दोस्त।
मकान नम्बर-5268/2 माडर्न हाउसिंग कम्पलैक्स,
मनी माजरा-160101 (यू0टी0-चण्डीगढ़)
मोबा. : 9814067786, निवास : 01722731986


# आर्यों ने किया योगगुरू स्वामी रामदेव का अभिनंदन

**अरविन्द पाण्डेय**
**कोटा (राजस्थान)**

स्वामी रामदेव का स्वागत करते कोटा के आर्यजन- केसरी

विश्व योग दिवस के अवसर पर कोटा पधारे योग गुरू स्वामी रामदेव जी का आर्य समाज के सदस्यों द्वारा अभिनंदन किया गया।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में संत निवास पर स्वामी रामदेव जी से शिष्टाचार भेंट की। इस मौके पर आर्य समाज की महिला योग साधिकाएं भी उपस्थित रही। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा वेद मंत्रोच्चार पूर्वक योग गुरू का ओ3म् से सुसज्जित केसरिया पगडी पहनाकर तथा गायत्री मंत्र अंकित शॉल ओढाकर अभिनंदन किया गया तथा ओ3म् स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया।

अभिनंदन समारोह में आर्य समाज द्वारा रेजोनेंस के प्रमुख आर.के. वर्मा को पूज्य स्वामी रामदेवजी के हाथों से महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी संस्करण 'लाइट ऑफ ट्रूथ' तथा गायत्री मंत्र के भावार्थ सहित स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने स्वामी रामदेवजी से निवेदन करते हुए कहा कि आपके जीवन पर आधारित धारावाहिक रामदेव एक संघर्ष में आपके द्वारा सत्यार्थ प्रकाश को प्रेरणादायी ग्रंथ बतलाने पर एक सप्ताह से भी कम समय में डेढ लाख से अधिक सत्यार्थ प्रकाश बिक गए। आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने स्वामीजी को कोटा में संचालित आर्य समाज की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी भी दी।

# आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

- संस्कारित बालिकायें सशक्त राष्ट्र का आधार– जैन
- एक बालिका के निर्माण से दो परिवारों का निर्माण– डॉ. अनिल आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अतिथि स्वागत करते हुए -केसरी

**दिल्ली।** केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् के तत्वावधान में आठ दिवसीय विशाल आर्य कन्या चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर का भव्य आयोजन गीता भारती पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, फेज–2 में किया गया। शिविर में 185 बालिकाओं ने योगासन,जूडो कराटे, लाठी, तलवार, लेजियम, डम्बल, स्तूप, संध्या यज्ञ व भारतीय संस्कृति का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. रिखबचन्द जैन (चेयरमैन, टी.टी. ग्रुप) ने कहा कि संस्कारित बालिकायें ही सशक्त राष्ट्र का आधार हो सकती हैं। आज लड़के और लड़कियों की जनसंख्या में अनुपात बराबर न होने के कारण समाज में कई प्रकार की समस्यायें पैदा हो रही है। समाज को कन्या भ्रूण हत्या से होने वाली समस्या को गम्भीरता से समझना चाहिये।

शिविर में परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि भौतिकवाद के युग में देश की नयी युवा पीढ़ी संस्कारों से दूर होती जा रही है ऐसे समय में इन चरित्र निर्माण शिविरों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 22 शिविरों का आयोजन ग्रीष्म अवकाश में विभिन्न स्थानों पर चल रहा है। समारोह अध्यक्ष रचना आहूजा (प्रदेश महामंत्री, प्रान्तीय आर्य महिला सभा) ने कहा कि जो यहां रह कर सीखा है वह हमेशा याद रखना है तथा वह सब जीवन पर्यन्त काम आयेगा।

इस अवसर पर आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, रविदेव गुप्ता, जितेन्द्र डावर, अर्चना पुष्करना, नीता खन्ना, अनिता कुमार, आचार्य विजयभूषण आर्य आदि ने विचार रखे। प्रदेश अध्यक्षा उर्मिला आर्या ने कुशल संचालन किया। शिविर अध्यक्ष शिक्षाविद् राजरानी अग्रवाल ने कहा कि कन्याओं के निर्माण का कार्य सराहनीय प्रयास है। हम इस पुनीत कार्य को जारी रखेंगे। श्रीमती प्रवीन आर्या, सरस्वती, चिंकी व अनिता आर्या ने भजन सुनाये।

शिविर में प्रमुख रूप से डॉ. आर.के.आर्य (स्वदेशी फार्मेसी, हरिद्वार), गीता सचदेवा, अशोक आर्य आदि उपस्थित रहे। व्यायामाचार्य सौरभ गुप्ता के निर्देशन में मनीषा, नेहा, प्रगति, करूणा, पिंकी ने शिक्षण प्रदान किया।


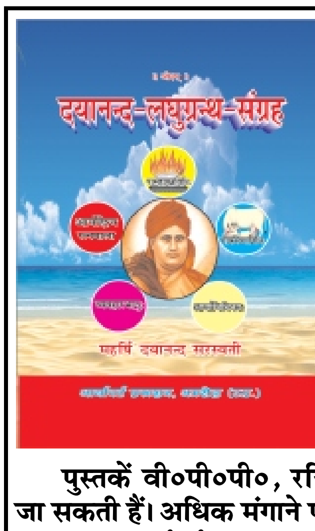


**अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं**

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक
**दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह**
इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/– रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांसपोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।
पता– आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा–244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में मंच का एक दृश्य -केसरी

# ऐतिहासिक रहा अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

## विश्व विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव ने किया उद्घाटन, आचार्य बालकृष्ण ने प्रदान की गरिमा

### मेघालय के राज्यपाल महामहिम गंगा प्रसाद एवं बिहार के राज्यपाल महामहिम सत्यपाल मलिक, चौ. वीरेन्द्र सिंह, प्रेमचन्द्र अग्रवाल व रमेश पोखरियाल निशंक आदि सहित पधारे अनेक नेता, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी धर्मानन्द, स्वामी अग्निवेश, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी रामवेश व प्रो. महावीर अग्रवाल आदि का मिला आशीर्वाद।

## विशाल एवं भव्य शोभायात्रा सहित अनेकानेक सम्मेलन बने आकर्षण के प्रमुख केन्द्र

**हरिद्वार।** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी की पुण्यभूमि में 6 से 8 जुलाई 2018 तक **अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन** का भव्य आयोजन किया गया।

इस महासम्मेलन में भाग लेने के लिए आर्यजगत में भारी उत्साह दिखा। आर्य समाज एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के इतिहास में पहली बार आयोजित होने वाले इस सम्मेलन में देश-विदेश स्थित गुरुकुलों के आचार्य तथा ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियां ने भारी संख्या में भाग लिया और अपनी-अपनी विशेष योग्यताओं, बौद्धिक एवं शारीरिक क्षमताओं का प्रदर्शन किया।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार जहां परिसर पर यह ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन आयोजित हुआ। एक आध्यात्मिक नगर के रूप में परिणत हो गया था। चारों ओर केसरिया ओ3म् ध्वज आर्यों का उत्साह बढ़ा रहे थे। आर्य समाज के इतिहास में इससे पूर्व इतना विशाल पण्डाल सम्भवत: पहले कभी नहीं लगा था। ऐसा वॉटरप्रूफ विशाल पंडाल, जिसमें एक साथ लगभग 25 हजार व्यक्ति बैठकर सम्पूर्ण कार्यक्रम का आनन्द ले सकते थे। भोजन ग्रहण करने के लिए अत्यंत आकर्षक दो अलग-अलग वाटरप्रूफ पंडाल लगाये गये थे, जिसमें एक तरफ महिलाएं तथा दूसरे पंडाल में पुरुषों के भोजन की व्यवस्था की गयी थी। यह व्यवस्था अपनी अलग छटा बिखेर रही थी। पुस्तक विक्रेताओं के लिए अत्यंत आकर्षक तथा सुविधा सम्पन्न वाटरप्रूफ स्टॉल बनवाये गये थे, जिसमें देश भर से पधारे पुस्तक विक्रेता अध्यात्म की पिपासा शान्त करने के लिए उत्साह के साथ उपस्थित थे। चारों तरफ ध्वनिविस्तारक यंत्र लगाये गये थे, जिससे पूरे परिसर में कहीं से भी कार्यक्रम को सुना जा सकता था। पंडाल में चारों तरफ बड़े-बड़े एलईडी स्क्रीन लगाये थे, जिन पर सुविधापूर्वक प्रत्येक कार्यक्रम को देखा जा सकता था। पानी तथा प्रकाश की अत्यंत सुन्दर व्यवस्था थी। थोड़ी-थोड़ी दूर पर स्थान-स्थान पर पीने के लिए शुद्ध ठण्डे जल के नल लगवाये गये थे। आगंतुकों की प्रत्येक समस्या को सुलझाने के लिए जगह-जगह विभिन्न कार्यालय बनाये गये थे, जिससे किसी भी व्यक्ति को कोई भी परेशानी न हो सके। भोजन तथा जलपान की इतनी सुन्दर व्यवस्था सम्भवत: आर्य समाज के इतिहास में पहली बार की गयी थी। प्रात: 6 बजे से लेकर रात्रि लगभग 1 बजे तक जलपान तथा भोजन निरंतर चलता रहता था। इस ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन में की गयी प्रत्येक व्यवस्था अपने आप में ऐतिहासिक थी।

पांच कुण्डीय यजुर्वेद शतक महायज्ञ के लिए विशेष यज्ञशाला का अत्यंत आकर्षक निर्माण किया गया था। ओ3म् ध्वज तथा ओ3म् की झण्डियों से पूरे परिसर को यज्ञमय बना दिया गया था। विशाल मंच पर यज्ञ के ब्रह्मा का आसन तथा वेदपाठी ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों के लिए अलग-अलग मंच बनाये गये थे। सारे वातावरण का यज्ञीय तथा अध्यात्ममय बना दिया गया था।

इस अवसर पर इस अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के सूत्रधार व सार्वदेशिक सभा के प्रधान व यशस्वी आर्यनेता स्वामी आर्यवेश ने अपने परिचय व्याख्यान में कहा कि देश में प्रचलित वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करने के उद्देश्य से यह महासम्मेलन आयोजित किया गया है। मैकाले द्वारा प्रदत्त शिक्षा पद्धति के कारण युवाओं में हो रहे चारित्रिक पतन, देश में व्याप्त बेईमानी, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, ईश्वर पर अविश्वास, महिलाओं पर अत्याचार आदि सामाजिक बुराइयां जो पनप रही हैं, वह वर्तमान शिक्षा प्रणाली की देन है। इन समस्त सामाजिक बुराइयों को जड़मूल से समाप्त करने के लिए एकमात्र विकल्प गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली ही है। गुरुकुलों के स्तर को सुधारने, उनके पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने तथा एक केन्द्रीय बोर्ड बनाने के लिए इस सम्मेलन में गम्भीर विचार किया गया।

स्वामी जी ने कहा कि मैकाले द्वारा सड़ी-गली अधूरी और लंगड़ी शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को प्रारम्भ करने का प्रस्ताव भारत सरकार को भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि समस्त गुरुकुलों को एक सूत्र में बांधकर विश्वविद्यालय के साथ समायोजित करने की योजना हम लोग बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त सभी गुरुकुलों में एक समान पाठ्यक्रम पढ़ाये जाने की व्यवस्था भी की जा रही है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुलों का कायाकल्प किया जाना चाहिए। वर्तमान विषयों के साथ आधुनिक विषयों को भी पाठ्यक्रम में शामिल करने की महती आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि मानव का सर्वांगीण विकास चरित्र निर्माण, सादा जीवन उच्च विचार, समान शिक्षा व्यवस्था, मूल्याधारित शिक्षा व्यवस्था, प्राचीन भारतीय संस्कृति, एवं वैदिक ज्ञान के प्रति प्रेम तथा प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा का समायोजन, ये हैं गुरुकुलीय शिक्षा की विशेषताएं। स्वामी जी ने कहा कि सरकार ने शिक्षा पद्धति मे परिवर्तन करने के लिए कोठारी समिति बनाई है। यह समिति शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की संभावनाएं तलाश करेगी। हमारा प्रयास है कि इस समिति कै समक्ष आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा तैयार किया जाने वाला प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाए, जिससे वे अपने चिन्तन द्वारा एक उच्च स्तर की शिक्षा पद्धति लागू करवा सकें। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मतलब डिग्री प्राप्त करना नहीं है। शिक्षा संस्कृति का आधार और उन्नायक है। शिक्षा का संबन्ध ज्ञानार्जन विषय को पदार्थों के तत्वों का ज्ञान, संसार की प्रत्येक वस्तु के स्वरूप का ज्ञान और उसकी उपयोगिता का आकलन करने के साथ ही मुनष्य के विवेक को प्रबुद्ध करना भी है। यही गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति है। स्वामी जी ने कहा कि समय रहते यदि हमने गुरुकुलों और गुरुकुल शिक्षा पद्धति की सुरक्षा नहीं की, शक्ति प्रदान नहीं की, सरकार से मजबूती नहीं दिलाई, तो आने वाले समय में भारत पर पाश्चात्य संस्कृति का कब्जा पूरी तरह से हो जाएगा।

गुरुकुल महासम्मेलन में उत्तराखण्ड विधानसभा के अध्यक्ष प्रेमचन्द्र अग्रवाल, पूर्व मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक, दिल्ली के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ0 योगानन्द शास्त्री, उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ0 प्रेमचन्द्र शास्त्री, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द, डॉ0 धीरज सिंह, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, मंत्री प्रो0 विट्ठल राव, पं0 मायाप्रकाश त्यागी, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, आचार्य बालकृष्ण, आचार्य सोमदेव शास्त्री, डॉ0 सूर्यादेवी चतुर्वेदा, महेन्द्र भाई, आचार्या सुकामा, आचार्या नंदिता, आचार्या प्रियंवदा वेदभारती, डॉ0 प्रेमपाल शास्त्री, डॉ0 अनिल आर्य (के0आ0यु0प0), विदेह योग, सुरेशचन्द्र अग्रवाल, विनय आर्य, स्वामी श्रद्धानन्छ पूर्व सांसद रासासिंह

शेष पृष्ठ- ६ पर...

पृष्ठ-८ का शेष

# ऐतिहासिक रहा अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल...

रावत, सत्यपाल पथिक, कैलाश कर्मठ, आ0 संजीव रूप, पं0 घनश्याम सिंह प्रेमी, डॉ0 पवित्रा विद्यालंकार, पं0 नरेश दत्त ब्र0 कड़कदेव, डॉ0 रघुवीर वेदालंकार, डॉ0 वेद प्रकाश श्रोत्रिय, बिसराम रामविलास, डॉ0 ज्वलंत कुमार शास्त्री, आ0 चन्द्रशेखर शास्त्री, पतंजलि वि0वि0 के कुलपति प्रो0 महावीर अग्रवाल, धर्मेन्द्र शास्त्री, डॉ0 विनोद चन्द्र विद्यालंकार, डॉ0 रूपकिशोर शास्त्री, डॉ0 योगेश शास्त्री, डॉ0 सुनील कुमार त्यागी 'अमित', डॉ0 जयदत्त उप्रेती, वरिष्ठ पत्रकार तथा चिन्तक डॉ0 वेदप्रताप वैदिक, सुमनकुमार वैदिक आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

**मानव सेवा प्रतिष्ठान ने किया सम्मान समारोह :**

मध्याह्न 1 से 2 बजे तक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली तथा स्वाती इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक द्वारा आर्यावर्त केसरी के सम्पादक डॉ0 अशोक कुमार आर्य सहित देश के लगभग 40 विशिष्ट विद्वानों, संन्यासयों, आचार्यों तथा भजनोपदेशकों का स्मृति-चिह्न भेंट कर, अंगवस्त्र प्रदान कर तथा सम्मान राशि भेंट कर सम्मान किया गया। सम्मान करने वाले गणमान्य महानुभावों में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, रामपाल शास्त्री जी, प्रो0 विट्ठलराव आर्य जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी प्रमुख थे।

**: भव्यता से हुआ समापन समारोह :**

महासम्मेलन के अन्तिम दिन 8 जुलाई को मध्याह्न दो बजे से समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने तथा संयोजन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो0 विट्ठलराव आर्य ने किया। इस अवसर पर बिहार के राज्यपाल महामहिम सत्यपाल मलिक मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान हुए। उनके आगमन के पश्चात् राष्ट्रगान का गायन हुआ। तत्पश्चात् राज्यपाल महोदय का स्वागत तथा सम्मान स्वाम अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, प्रो0 विट्ठलराव जी, गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता डॉ0 दीनानाथ शर्मा जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी आदि ने शॉल ओढ़ाकर अंगवस्त्र प्रदान कर तथा स्मृति चिह्न भेंटकर किया।

समापन समारोह में पधारे सम्माननीय संन्यासियों, प्रतिष्ठित तथा गणमान्य महानुभावों का समय-समय पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, पं0 मायाप्रकाश त्यागी जी, विट्ठलराव आर्य जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने शाल ओढ़ाकर, अंगवस्त्र प्रदान कर तथा स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान तथा अभिनन्दन किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने सभी गणमान्य महानुभावों का सम्मेलन में पधारने पर धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि इतने विशाल सम्मेलन में कुछ कमियां रह जाना स्वाभाविक है। आपको किसी भी प्रकार की यदि कोई असुविधा हुई है, तो मैं उसके लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हूं।

**: गुरुकुल परिचय सम्मेलन :**

यह सत्र स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में सभी गुरुकुलों से आये हुए आचार्यों एवं आचार्याओं का सम्मान किया गया तथा अपने गुरुकुल के परिचय एवं उपलब्धियों को उनके आचार्यों द्वारा बतलाया गया। प्रारम्भ में ही स्वामी आर्यवेश जी ने इस महासम्मेलन का उद्देश्य सभी आर्यसमाजों एवं गुरुकुलों को संगठित करना बताकर सर्वप्रथम प्रभात आश्रम का परिचय उपलब्धियों सहित स्वयं ही दिया। उन्होंने बताया कि यहां पर वरिष्ठ विद्यार्थी ही कनिष्ठ विद्यार्थियों का अध्यापन करते हैं। यह गुरुकुल विभिन्न गुरुकुलों को योग्यतम आचार्य एवं विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को अनेक सुयोग्य स्नातक प्रदान कर चुका है। गुरुकुलों के परिचय के पश्चात् इस त्रिदिवसीय महासम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में विराजमान स्वामी प्रणवानन्द महाराज ने इतने भव्य एवं अभुतपूर्व सम्मेलन को आयोजित करवाने के लिए स्वामी आर्यवेश जी एवं विट्ठलराव जी का विशेष रूप से धन्यवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापन किया, जिसके कि वे यथार्थ रूप से पात्र भी थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष

# अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन....

आयोजन समिति ने आर्यजनों से अपील की है कि अपनी-अपनी आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों के परिवार एवं विशेषकर युवाओं सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए आर्यजनों को प्रेरित करें। साथ ही, आपके आर्यसमाज की ओर से कितने आर्यजन महासम्मेलन में पहुंचेंगे, इसकी सूचना भी यथाशीघ्र सम्मेलन कार्यालय- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 को भेजें।

सभा द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि वे आर्य महानुभाव जिनके बच्चे विदेशों में कार्यरत् हैं, उन्हें विभिन्न माध्यमों से सम्मेलन की सूचना अवश्य दें तथा यदि वे इस वर्ष भारत आने का कार्यक्रम बना रहे हैं तो उनसे सम्मेलन की तिथियों में अपना कार्यक्रम बनाने को कहें, जिससे वे इस महा सम्मेलन में भी सम्मिलित हो सकें।

इस सम्मेलन को भव्य बनाने के लिए अपने आर्य समाज की ओर से प्रभात फेरियों का आयोजन करें तथा सम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में पहुंचने के लिए लोगों को प्रेरित करें। साथ ही इसके प्रचार-प्रसार हेतु आर्यसमाज के बाहर तथा मुख्य मार्गों तथा चौराहों पर सम्मेलन के होर्डिंग्स बनवाकर लगवाएं तथा प्रचार सामग्री भी प्रकाशित करवाएं। लोगो, होर्डिंग्स, पोस्टर, पेम्फलेट आदि प्रचार सामग्री प्रान्तीय सम्मेलन कार्यालय अथवा केन्द्रीय सम्मेलन कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है तथा www.aryamaha sammelan.org तथा www. thearyasamaj.org से डाउनलोड भी की जा सकती है।

**वयोवृद्धों का होगा सम्मान**

आर्य महासम्मेलन में समिति द्वारा ऐसे आर्यजनों का, जो 80 वर्ष से अधिक आयु के हों, तथा जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार को समर्पित किया हो, अथवा विशेष योगदान दिया हो, का विशेष सम्मान किये जाने की योजना है। ऐसे आर्यजनों का पूर्ण विवरण लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजें, जिससे उनके नामों पर समिति विचार कर सके।

**युवा कार्यकर्ता भी होंगे महासम्मेलन में सम्मानित**

महासम्मेलन में युवा कार्यकर्ता/ महिला कार्यकर्ता, जिन्होंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अत्यंत उल्लेखनीय कार्य किया हो, को भी सम्मानित किया जाएगा। आयोजन समिति द्वारा ऐसे नामों के भी पूर्ण विवरण सहित प्रस्ताव आमंत्रित किये गये हैं।


# कार्यालय जिला आबकारी अधिकारी, अमरोहा

संख्या 616/जि0आ0अ0/आ0दु0व्यवस्थापन/2018–19/ अमरोहा/दिनांक जुलाई 28, 2018

## विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि जनपद अमरोहा में वित्तीय वर्ष 2018-19 के लिए मदिरा दुकानों के व्यवस्थापन हेतु आयोजित छठे चरण दिनांक 13.07.2018 के ई-टेण्डर के उपरान्त अवशेष/ अव्यवस्थित देशी शराब दुकानों क्रमशः 1. मण्डी चौब, 2. गजरौला स्टेशन, एवं 3. हसनपुर को दैनिक आधार पर संचालन हेतु 14 दिन अथवा स्थाई व्यवस्थापन की तिथि जो पहले हो, के लिए आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। दैनिक आधार पर देशी शराब की फुटकर दुकानों की दैनिक बेसिक लाइसेंस फीस/ लाइसेंस फीस (प्रतिफल फीस) दुकान की निर्धारित वार्षिक बेसिक लाइसेंस फीस एवं लाइसेंस फीस (प्रतिफल फीस) का 1/365 वें भाग पर प्राप्त सर्वोच्च ऑफर (एम0जी0क्यू0) पर किया जाएगा।

उपरोक्त के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण क्षेत्रीय आबकारी निरीक्षकों एवं जिला आबकारी अधिकारी कार्यालय से किसी भी कार्यदिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

**जिला आबकारी अधिकारी,**
अमरोहा।

**जिलाधिकारी,**
अमरोहा।

# दर्शनीय स्थली है ऋषि उद्यान अजमेर स्थित

# परोपकारिणी सभा

## आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर

सुमन कुमार वैदिक

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी 'परोपकारिणी सभा', अजमेर आर्यजगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है, जो ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत–संकल्प है। सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है। यहां वेदों एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

**नियमित यज्ञोपदेश :** प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ–प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। आर्ष–पद्धति से संचालित गुरूकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी, जो साधना एवं समाज–सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं, उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। अतिथियों की यथोचित सुविधा प्रदान करने करने हेतु पूर्ण रूपेण प्रयासरत हैं एवं सभी सुविधाएं आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है।

**गौशाला :** यहां लगभग 40 गाय हैं। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है।

**वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम**

वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है।

**विशाल पुस्तकालय :** यहां दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है। सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोधकार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किये जाते हैं, जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं।

**व्यायामशाला एवं अतिथि यज्ञ : यहां** योग्य शिक्षकों द्वारा युवाओं को निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं। सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें, इसके लिए सभा की योजना के अनुसार प्रतिदिन 10 रूपये अथवा प्रतिवर्ष 5 हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किये जाते हैं। ऐसे 'अतिथि यज्ञ के होता' निश्चित

स्व0 डॉ0 धर्मवीर जी

स्वामी विश्वंग जी

तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर न अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं, ऐसे महानुभाव अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पांच हजार एक सौ रूपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित कर सकते हैं। उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट पर किया जाता है।

**विशेष आकर्षण का केन्द्र हैं यह स्थली**

ऋषि उद्यान, पुष्कर तीर्थ मार्ग पर अजमेर रेलवे स्टेशन से 4 कि0मी0 दूर अना सागर झील के किनारे बड़ा ही रमणीक स्थल हैं। यहां दोनों समय सम्पूर्ण वर्ष यज्ञ किया जाता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त कुछ वेदमन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य का स्वाध्याद, तदनन्तर वेद–प्रवचन होता है। रविवार को विशेष यज्ञ होता है। अतिथि यज्ञ, होता, दान देने वाले यज्ञमानों के जन्मदिन, पुण्यतिथि, वैवाहिक वर्षगांठ आदि अन्य अवसरों पर सम्बन्धित विशेष मंत्रों से आहूति दिलवायी जाती है। सायंकाल यज्ञ के पश्चात् ऋषि दयानन्द द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश–मंजरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। शनिवार सायंकाल साधक साधिकाओं के द्वारा प्रवचन होते हैं। निवास, भोजनालय, गऊशाला, पार्क इत्यादि सर्वसुविधाजनक सुन्दर भव्य एवं दर्शनीय हैं। यहां परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में साधना शिविर समय–समय पर लगते रहते हैं, जिनमें जन–सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखाई जा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं। यह सभा आचार्य स्व0 डॉ0 धर्मवीर जी की पुण्य पावन कर्म स्थली भी है।

**नियमित स्तम्भ**

## आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर

आर्यावर्त केसरी के इस नियमित स्तम्भ में आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहरों के विषय में महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है। विद्वान लेखकों, इतिहासविदों तथा इन ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षकों व व्यवस्थापकों से अनुरोध है कि इस स्तम्भ के लिए अग्रांकित पते पर धरोहर के चित्र सहित बहुमूल्य सामग्री भेजने का कष्ट करें। साथ ही, अपना पासपोर्ट साइज़ फोटो भी प्रकाशनार्थ भेजें। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221, मोबा. : 9412139333

# प्रेरक प्रसंग (क्रमशः)

रामकुमार 'धनुर्धर' वानप्रस्थ द्वारा सम्पादित नीति शतक से..

## १- विदेशी रानी को श्रद्धांजलि क्यों

हमारे नीतिग्रंथों में कहा गया है कि जननी जन्मभूमि से बढ़कर संसार में कोई दूसरी वस्तु नहीं, यहां तक कि स्वर्ग का महत्व भी जन्मभूमि के सामने कम ही है। स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी विनायक दामोदर सावरकर जीवन भर इसी विश्वास को मानते रहे। यह प्रसंग उन दिनों का है, जब वह नासिक में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। दूसरी ओर 'मित्र-मेला' संस्था के माध्यम से वह गुप्त रूप से युवकों को स्वाधीनता प्राप्ति के यज्ञ में आहुतियां देने के लिए प्रेरित करते रहते थे। महारानी विक्टोरिया के निधन का समाचार मिलते ही श्रद्धांजलि कार्यक्रमों की होड़ मच गयी। 'मित्र-मेला' को सरकारी कोप से बचाने के लिए कुछ सदस्यों ने संस्था की ओर से महारानी विक्टोरिया को श्रद्धांजलि देने का सुझाव दिया। विनायक दामोदर ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा कि ''इंग्लैण्ड की महारानी ने स्वातंत्र्य समर को कुचलने का आदेश देकर असंख्य भारतीय राष्ट्रभक्तों की हत्या कराई। वह हमारे देश को दासता की बेड़ियों में जकड़ने वाले, हमारी कमाई से मौज उड़ाने वाले अंग्रेजों की रानी हैं, भारत की नहीं। हम एक हृदयहीन विदेशी रानी को श्रद्धांजलि क्यों दें?''

अकेले सावरकर की गर्जना ने 'मित्र-मेला' द्वारा रानी विक्टोरिया को श्रद्धांजलि अर्पित किये जाने के प्रस्ताव को तार-तार कर डाला।

## २- जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान

**अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।**
**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥**

रामायण का प्रसंग है। सीता-हरण का दुस्साहस करने वाले लंकाधिपति रावण का भगवान श्रीराम ने अंत कर दिया, और लक्ष्मण जी को आदेश दिया कि लंका जाकर वह विभीषण का राजतिलक संपन्न कराएं।

लक्ष्मण लंका पहुंचे, तो स्वर्णनगरी की अनूठी शोभा तथा चमक-दमक ने उनका मन मोह लिया। लंका की वाटिका के तरह-तरह के सुगंधित पुष्पों को वह काफी समय तक निहारते रहे। वहां की चमक-दमक उन्हें आकर्षित कर रही थी। विभीषण का विधिपूर्वक राजतिलक संपन्न कराने के बाद वह श्रीराम के पास लौट आए। उन्होंने श्रीराम के चरण दबाते हुए कहा, ''महाराज, लंका तो अत्यंत दिव्य सुंदर नगरी है। मन चाहता है कि मैं कुछ समय के लिए लंका में निवास करूं। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है।'' लक्ष्मण का लंका नगरी के प्रति आकर्षण देखकर श्रीराम बोले, ''लक्ष्मण यह ठीक है कि लंका सचमुच स्वर्ग के समान आकर्षक है, प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है, किंतु यह ध्यान रखना कि अपनी मातृभूमि अयोध्या तो तीनों लोकों से कहीं अधिक सुंदर है। जहां मानव जन्म लेता है, वहां की मिट्टी की सुगंध की किसी से तुलना नहीं की जा सकती।'' लक्ष्मण अपनी जन्मभूमि अयोध्या के महत्व को समझ गये। उन्होंने कहा, ''प्रभु वास्तव में हमारी अयोध्या तीनों लोकों से न्यारी है।''

## ३- राग-द्वेष से रहित हृदय में शान्ति

विख्यात आर्य संन्यासी महात्मा आनंद स्वामी सरस्वती उन दिनों लाहौर के दैनिक 'मिलाप' के संपादक थे। वह प्रायः कुछ दिन के लिए अज्ञातवास के लिए चले जाते थे तथा कुछ दिन साधना कर लौट आते थे।

एक बार कांगड़ा के वनों में वह साधना कर रहे थे। जैसे ही साधना में बैठते कि उन्हें लाहौर के एक ऐसे व्यक्ति की याद आने लगती, जो उन्हें दुश्मन मानता था। महात्मा जी भी बदले में उसके प्रति घृणा का भाव रखते थे। जब साधना में उनका मन नहीं लगा, तो उनकी अन्तरात्मा ने जैसे चेतावनी दी- एक ओर तू आत्मशांति चाहता है, दूसरी ओर तेरे हृदय में घृणा भरी है। जब तक हृदय में घृणा रहेगी, शांति कदापि नहीं मिलेगी।

स्वामी जी तुरंत उठे और लाहौर जा पहुंचे। वह सीधे उस व्यक्ति के घर गये, जिससे उनकी शत्रुता थी। वह उन्हें देख सकपका उठा। महात्मा जी ने अपनी पगड़ी उसके पैरों में रख दी तथा बोले कि शत्रुता की भावना के कारण मेरा मन साधना में नहीं लगता। मुझे क्षमा कर दो, तमाम गलतियां मेरी ही थीं। यह सुनते ही दोनों की आंखों से आंसू बहने लगे। शत्रुता व घृणा जैसे आंसू के साथ बहकर काफूर हो गये। दूसरे दिन महात्मा जी फिर से साधना में बैठे, तो समाधि लग गयी। राग-द्वेष से रहित हृदय ने अपूर्व शांति की अनुभूति की।

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
**'नीति शतक' (दो भागों में)**
इसमें है सौ-सौ प्रेरक कथानकों का समावेश

स्वयं पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ाएं

# आरोपित मलमासों से विकृत होते त्यौहार

आचार्य दार्शनेय लोकेश

पुरुषोत्तम मास : पुरुषोत्तम तत्व चिंतन। इस वर्ष 16 मई से 13 जून 2018 तक की ज्येष्ठ अधिकमास चल रहा है। किसी महानुभाव के द्वारा फेसबुक पर दिये गये एक लेख विशेष से है, उपरोक्त आरम्भिक अंश। लेख पर दी गई मेरी प्रतिक्रिया आर्यावर्त केसरी के पाठकों की खास जानकारी में लाने का मेरा प्रयास है। ध्यान रहे, गणित के सैद्धान्तिक आधार पर 16 मई से 13 जून 2018 तक का जेष्ठमास, अधिमास नहीं था। जैसा कि सब जानते ही हैं, अधिमास या क्षयमास, चांद्र मासों से ही सम्बंधित होते हैं। सौर मासों से इनका कोई संबंध नहीं है सिवाय कि सौरमास ही चंद्रमासों की गणना के आधार होते हैं। लगभग प्रत्येक ३२वें महीने बाद एक चान्द्र मास अधिमास हो जाता है। (अधि मास अर्थात् मलमास या अधिक हुवा या बढ़ा हुवा मास। अंग्रेजी में इसे Eltra month कहेंगे। धार्मिक सन्दर्भ जोड़कर इस पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है।

अब जो नहीं जानते हैं, वह है संक्रांतियों का स्वाभाविक, प्राकृतिक अथवा गणितीय भाषा में कहें तो क्रांति युक्त (Declination based) निर्धारण। उदाहरण के लिए- वैशाखी या वैशाख संक्रांति का निर्धारण सूर्य के 0 क्रांति युक्त 0 भोगांश (Longitude) पर ही आधारित है। इस स्वाभाविक सम्बन्ध से हटकर नहीं। ऐसा ही शरद सम्पात अथवा कार्तिक मास की संक्रांति को जानना चाहिए। इसी प्रकार मकर संक्रांति का निर्धारण सूर्य की परम क्रांति (MaÜimum Declination) युक्त भोगांश अर्थात् Longitude पर निर्धारित है। ऐसे ही कर्क या श्रावण संक्रांति को सूर्य की परम क्रांति से जानना चाहिए। सभी नैष्ठिक हिन्दुओं को किञ्चित परिश्रम पूर्वक, समय लेते हुए किंतु इस सत्य को समझना बहुत आवश्यक है। तभी वे प्रचलित प्रपञ्ची या भ्रामक पञ्चाङ्गों से बाहर आ सकेंगे। सम्पात (वसंत या शरद विषुव) एवं अयन (उत्तरायण या दक्षिणायन) विन्दु ही संक्रांतियों और ऋतुओं के नियामक होते हैं। यही है। ऋतु निर्धारण का एक विशुद्ध, प्राकृतिक अथवा अटल सत्य है।

सिद्धान्त– असंक्रान्ति मासो मलमासः। अर्थात् किसी भी चांद्रमास के अन्तर्गत (शुक्ल प्रतिपदा के शुरु होने से और उस मास की अमावस्या के समाप्त होने तक के बीच मे) सौर संक्रान्ति का समय नहीं आना चाहिए। तब ही मलमास की उत्पत्ति होती है। यदि उक्त समय के बीच में कोई भी सौर संक्रांति घटित हो जाती है तो तब वहां मलमास नहीं हो सकेगा। यह भी तब, जब संक्रान्तियां यथावत क्रांति साम्य के साथ ली जाएं। कथित निरयण संक्रांतियां क्रान्ति साम्य युक्त संक्रांतियां न होने से वैज्ञानिक अथवा प्राकृतिक या ग्राह्य नहीं हैं। वो वास्तव में संक्रान्तियाँ हैं ही नहीं। इन कपोल कल्पित संक्रांतियों पर आधारित होने से 16 मई से 13 जून तक का कथित ज्येष्ठ का मलमास या अधिमास निष्प्रयोज्य था। श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् (एकमात्र वैदिक पञ्चाङ्ग) संक्रांति घटित होने के वास्तविक तथ्य को पंचांग में देखकर समझने की कोशिश करने का प्रयास करें तो कोई भी व्यक्ति ठीक ठीक अवगत हो सकेगा। इसके लिए आप चाहें तो अपना पता भेज कर, यह वैदिक पञ्चांग प्राप्त कर सकते हैं।

अस्तु, वर्तमान जेष्ठ मास को मलमास मानकर त्योहारों तथा शुभ मांगलिक कार्यों के लिए की गई वर्जना, नितांन्त भ्रमात्मक सोच और अहिन्दु कृत्य था। इस गलत निर्धारण का आगे भी सभी त्योहारों पर बुरा प्रभाव पडेगा। उदाहरणार्थ, बृहस्पतिवार 14 जून 2018 से आषाढ़ शुक्ल पक्ष शुरू होते के साथ ही आषाढ़ चांद्रमास शुरू होना जानना चाहिए जबकि प्रचलित और कथित निरयण पंचांग इसे जेष्ठ शुक्ल पक्ष का और वह भी अधिमास के रूप में ही कहेंगे। अब त्योहारों पर पड़ने वाला असर देखिये– वास्तविक देवशयनी एकादशी जो 23 जून को थी, या वास्तविक गुरुपूर्णिमा जो जो २८ जून को थी, इन जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों को भी पहिचान या मान्यता नहीं मिल पायी और अनजाने ही हमसे सांस्कृतिक अपराध हो गया। जब त्योहारों को मानना था तब मनाये नहीं और जब नहीं मानना था तब मनारहे होंगे। ऐसा ही अब आगे के त्यौहार हरियाली तीज (१५ जुलाई २०१८), गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती (१६ जुलाई २०१८), सिंह या भाद्रपद संक्रान्ति (२२ जुलाई २०१८), पुत्रदा एकादशी (२३ जुलाई २०१८), यजुरुपाकर्म एवं अथर्व उपाकर्म तथा रक्षाबंधन (शुक्रवार, २७ जुलाई २०१८), श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वास्तविक तिथि ०४ अगस्त २०१८) इत्यादि सभी भावी त्यौहार २३ –२४ दिन की गलती से मनवाये जाते रहेंगे। और ये सब हुआ और होता रहेगा पंचांगकारों के गलत पंचांगों के चलते अथवा गलत संक्रांतियों के लिए जाते रहने से। क्या पंचांगकार इसे समझने की और धर्म परायणा जनता को अपने व्रत पर्व शुद्ध तिथियों में मनाने सुअवसर –सौभाग्य दे सकेंगे? पता नहीं कब तक सन्देह और सम्भावनाओं के अस्पष्ट भविष्य में मंडराता रहेगा ये प्रश्न। जय भारत, जय भारती!

सम्पादक एवं गणितक, श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्
(एक मात्र वैदिक पञ्चाङ्ग)

## वैचारिक प्रवाह

श्रद्धानन्द योगाचार्य, बजरिया कायमगंज, फर्रुखाबाद

### मादक पदार्थ निषेध दिवस से शराब बन्द करें

26 जून को मादक पदार्थ निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है, किंतु संविधान के अनुच्छेद 47 के अनुसार देशी-विदेशी शराब डाक्टर के पर्चे पर बिक्री नहीं होने से जन साधारण परिवार विनाश की स्थिति में पहुंच गये हैं। अत: विनाश से बचाने हेतु अनुच्छेद 47 के अनुसार देशी-विदेशी शराब की बिक्री डॉक्टर के पर्चे पर करना सुनिश्चित की जावे। 21 वर्ष से कम के युवाओं को शराब से बचाने हेतु आयु प्रमाण पत्र की प्रति लेना सुनिश्चित कर रजिस्टर बनायें। खद्य सुरक्षा औषधि प्रशासन द्वारा देशी-विदेशी शराब के नमूने जांच कराये जावें, जिससे जहरीली शराब पर रोक लगेगी। इनकी दुकानों का जीएसटी नम्बर पंजीयन के साथ वाणिज्य अधिष्ठान रजिस्ट्रेशन कराकर नकली/ बाहर से आने वाली शराब बन्द करें।

### विश्वयोग दिवस पर अश्लीलता मिटाएं

21 जून को 'विश्व योग दिवस' के रूप में मनाया जाता है, किंतु फिल्मी/ दूरदर्शन आदि पर अश्लीलता फैलाई जाती है। परिवार कल्याण के नाम पर माता-बहिनों के नग्न चित्र छापकर परिवार विनाश किया जाता है। समाचार पत्रों में यौनांग बढ़ाने के विज्ञापन छापे जाते हैं, जिससे योग से वियोग होता है। अत: योग= अनुशासन को सार्थक करते हुए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के साथ शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान को अपनाकर आसन पर स्थिरता के साथ बैठकर श्वास-प्रश्वास को रोकते हुए प्राणायाम करें, तब प्रत्याहार से इन्द्रियां नियन्त्रित होकर ही धारणा, ध्यान, समाधि अवस्था प्राप्त होती है। जैसे नदी समुद्र में गिरते समय वापिस नहीं लौटती, वैसे ही जीव परमानन्द को प्राप्त होकर मोक्षानन्द प्राप्त कर लेता है।

### श्रमेव जयते अर्थात् परिश्रम से ही सफलता है

1 मई को श्रमदिवस के रूप में मनाया जाता है, इसलिए जो श्रम से प्राप्त किया जाए, उसी से शान्ति मिलती है। किंतु कुछ लोग बिना श्रम के ही सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, किंतु यह संभव नहीं है। श्रमदान भी किया जाता है, किंतु श्रमिकों को सबसे कम वेतन मिलता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होकर बेरोजगारी बढ़ी है। अत: रोजगार भी बढ़ाएं। चौदह वर्ष तक के अनाथ बच्चों को जो शासन द्वारा स्पांसरशिप सहायता देने का प्रावधान है, उसका अनुपालन नहीं हो रहा है, जिससे गरीबी बढ़ती जा रही है। साधन के अभाव में ये लोग पढ़ने से वंचित हैं और मजदूरी करके परिवार पालन करते हैं, अत: शासन की स्पांसरशिप सहायता को प्रदान कराते हुए अधिकारियों से अनाथ बच्चों की पढ़ाई कराकर गरीबी दूर करायें।

## आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

### विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 15 सितम्बर 2018 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कारों की घोषणा 01 अक्टूबर 2018 तक की जाएगी। पुरस्कार इस प्रकार हैं-

* अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।
* राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।
* नि:शक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।
* वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।
* युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
☎ फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

## वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

## आर्य कन्या की सूझबूझ

प्रस्तुत पुस्तिका 'आर्य कन्या की सूझ बूझ' पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की प्रसिद्ध पुस्तक 'घर-वर की खोज' का अन्तिम कथात्मक अंश है। यह पुस्तिका अत्यन्त रोचक संग्रहणीय तथा पठनीय है। इस पुस्तिका में एक कथा है जिसमें वर्णन है कि- पंजाब मारवाड़ की सीमा पर बसे नगर में वैदिक विचार धारा वाले दाताराम नाम के एक सज्जन रहते थे। उनकी एक विदुषी, सुशील, वेदभक्त, यज्ञप्रिय, मधुरभाषिणी कन्या थी, जिसका नाम भी विदुषी था। जब वह युवा हुई तो उसके सेठ पिता जी वर हेतु चिन्तित रहने लगे। एक आर्य उपदेशक ने उन्हें पंजाब के एक नगर में दो श्रेष्ठ वर एवं घर बताये। सेठ जी को उन दोनों परिवारों में आचार-विचार की दृष्टि से जो लड़का पसन्द आया, वह सनातनी परिवार का था। उसके माता-पिता भी पौराणिक मान्यताओं से पूरी तरह सराबोर थे और अपने कुल पुरोहित के अनुसार ही प्रत्येक कर्मकाण्ड सम्पन्न करते थे। सेठ दाताराम ने अपनी कन्या को सारी स्थिति यथावत् बता दी। उन्होंने अपनी पुत्री को समझाया कि "आपकी मंगनी हमने कर दी है। अब आगे के कार्य आपको करने हैं। तुम्हारी ससुराल वाले बहुत पवित्र और धर्मात्मा हैं, परन्तु सनातनी विचारधारा के हैं।

कन्या ने ध्यानपूर्वक पिताजी की सभी बातों को सुना और उनको आश्वस्त कर अपनी मानसिक तैयारी प्रारम्भ कर दी। पहले वह वेदपाठ करती थी, अब उसने सारी गीता भी याद कर ली। विवाह की तिथि निश्चित हुई, बारात बुलाई गयी। विवाह में एक बाधा विवाह-पद्धति की थी कि वह सनातनी हो या आर्यसामाजिक। इसका निराकरण दोनों पक्षों ने बहुत सहज ढंग से किया। यह पुस्तिका हर घर में पहुंचनी चाहिए ताकि इसे पढ़कर कल्याण हो सके।

**पुस्तक का नाम :** आर्य कन्या की सूझबूझ
**लेखक :** महात्मा प्रभु आश्रित महाराज
**सम्पादिका :** आचार्या डॉ0 प्रियम्वदा वेदभारती
**पृष्ठ :** 16, **मूल्य :** 8/-
**प्रकाशन तथा पुस्तक प्राप्ति का पता :** डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221, दूरभाष- 9412139333

## नीति शतक (भाग-१ व २)

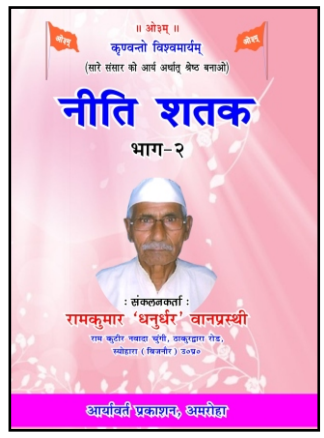


वरिष्ठ नागरिक व सेवानिवृत्त शिक्षक रामकुमार धनुर्धर वानप्रस्थी जी द्वारा सम्पादित पुस्तक नीति शतक एक पठनीय एवं संग्रहणीय पुस्तक है। अभी तक यह दो भागों (भाग-1 तथा भाग-2) में प्रकाशित हो चुकी है। नीति शतक (भाग-2) का उद्देश्य जनहित में आध्यात्मिक ज्ञान के चुने गये लेख रूपी पुष्पों को एक गुलदस्ते के रूप में प्रस्तुत करना है। इस पुस्तक में लगभग 100 कथाओं का समावेश पाठक को बांधे रखता है। इसमें कुछ महत्वपूर्ण विषयों जैसे- निस्वार्थ प्रेम की महत्ता, ईश्वर कृपा, सबसे ऊँचा तप परिवार पालन, चिड़िया की चौथी बात, यह बर्तन अभी कच्चा है, आत्मज्ञानी मौत के तप से नहीं डरता, चरित्र सबसे अनूठा रत्न है, पीढ़ियों की सहायता, सबसे सुखी व्यक्ति की पहचान, आत्म प्रशंसा से पुण्य नष्ट हो जाता है और नर में ही नारायण आदि के द्वारा समाज में आई विरोधाभासी क्रान्ति को शान्ति में बदलने का प्रयास किया है जो कि हमें एक सूत्र में बांधता है।

**पुस्तक का नाम :** नीति शतक (दो भागों में)
**लेखक :** रामकुमार 'धनुर्धर' वानप्रस्थी
**पृष्ठ :** 88, 100
**मूल्य प्रत्येक भाग :** 25/-
**पुस्तक प्राप्ति का पता :** रामकुमार 'धनुर्धर' वानप्रस्थी, राम कुटीर, नवादा चुंगी, ठाकुरद्वारा रोड, स्योहारा, जिला-बिजनौर (उ0प्र0) चलभाष : 9457015507

## आर्य समाज

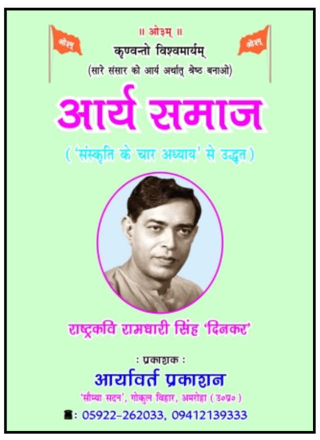


भारत के सुयोग्य विद्वान एवं राष्ट्रकवि डॉ0 रामधारी सिंह 'दिनकर' की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में उन्होंने 'आर्य समाज' शीर्षक से जो कुछ लिखा है, उसे इस लघु पुस्तिका 'आर्य समाज' में प्रकाशित किया गया है।

वास्तव में सदियों की मोहनिद्रा के पश्चात् उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग में भारत में जिन धार्मिक व सामाजिक सुधार आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ, उनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का उल्लेखनीय योगदान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार के कल्याण के उद्देश्य से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सं० १९३२ वि० (सन् 1875) में मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्य समाज के दस नियमों में सार्वभौमिक चिन्तन के दर्शन होते हैं।

यह लघु पुस्तिका **'आर्य समाज'** के विषय में नई पीढ़ी, समाज व राष्ट्र को एक नई दिशा देगी, ऐसा विश्वास है। वास्तव में इस लघु कृति से आर्य समाज के चिन्तन व योगदान के उल्लेखनीय बहुआयामी पक्षों का विवेचन करती है। आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित यह पुस्तिका संग्रहणीय तथा पठनीय है। उत्सवों तथा समारोहों में इसे बड़ी संख्या में वितरित किया जाना चाहिए।

**पुस्तक का नाम :** आर्य समाज
**लेखक :** राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'
**पृष्ठ :** 12, **मूल्य :** 8/-
**प्रकाशन तथा पुस्तक प्राप्ति का पता :** डॉ0 अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221, दूरभाष- 9412139333

## भजन माला

आर्यावर्त प्रकाशन की ओर से श्रद्धालु-धर्मप्रेमी भक्तों की सेवा में लोकप्रिय-सुमधुर भक्ति गीतों का यह संग्रह 'भजनमाला' शीर्षक से इस आशय से प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि हृदय को छूने वाले प्रभु भक्ति के गीतों का वे अपरिमित आनन्द ले सकें। साथ ही इसमें ऋषि महिमा, आत्म कल्याण, लोकोपकार व जनजागरण सम्बन्धी अनेक कंठप्रिय भजनों का संकलन होने से इसकी उपयोगिता में और भी अधिक वृद्धि हो गयी है।

इन गीतों के गुनगुनाने से जहां आत्मचेतना व ईश्वर भक्ति का भाव स्वत: ही प्रस्फुटित होने लगता है, वहीं इनसे आत्मशक्ति का उदय होता है, विभिन्न प्रकार के तनाव (डिप्रेशन) उदासीनता, शिथिलता व विशाद का खात्मा होता है और नवचेतना जागृत होती है। इतना ही नहीं, सम्पूर्ण वातावरण व अन्त:करण ईश्वर भक्ति व मातृ-पितृ एवं ऋषि ऋण के प्रति कृतज्ञता के भावों से ओतप्रोत हो जाता है।

**पुस्तक का नाम :** भजन माला (लोकप्रिय- सुमधुर भजनों का संग्रह)
**लेखक :** डॉ0 बीना/डॉ0 अशोक कुमार आर्य
**पृष्ठ :** 56, **मूल्य :** 20/-
**प्रकाशन व पुस्तक प्राप्ति का पता :** आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221, दूरभाष- 9412139333

## डॉ० लोखण्डे की चार पुस्तकें प्रकाशन की राह पर

**प्रकाश हेरकर**

भारतीय संस्कृति और अध्यात्म पर प्रो0 चन्द्रशेखर लोखण्डे ने अब तक दो दर्जन के लगभग पुस्तकें लिखी हैं, जो भारतवर्ष के विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हुई हैं। उनके द्वारा लिखित और सम्पादित क्रमश: 'हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास' और 'शुद्धि आन्दोलन और मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी'' विशेष हैं। अभी हाल ही में जो पुस्तकें प्रकाशनार्थ गयी हैं, और शीघ्र ही छप कर आ रही हैं, उनमें 'ईश्वर अवतार शास्त्रसम्मत है?' आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, दिल्ली; सुमन्त्र सुविचार' चार भाषाओं में महापुरुषों के सुवचन; विजय प्रकाश, नागपुर, 'मैं दयानन्द बोल रहा हूँ' विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली तथा श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य प्रकाशन हिण्डौन सिटी, राजस्थान से 'हैदराबाद मुक्तिसंग्राम का इतिहास' द्वितीय संस्करण ये मुख्य हैं।

डॉ0 चन्द्रशेखर लोखण्डे (शास्त्री) गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक और जयक्रान्ति महाविद्यालय, लातूर में हिन्दी-संस्कृत के प्राध्यापक रहे हैं तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम उपदेशक रहे हैं।

उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु 'संस्कृति रक्षक मंच' की स्थापना की है, जिसके माध्यम से वे व्याख्यानमाला चलाते हैं। उनके साथ अनेक प्राध्यापक एवं बुद्धिजीवी जुड़े हैं, जो अनेक स्कूलों और कॉलेलों में जाकर संस्कृति और इतिहास पर व्याख्यान देते हैं। उनके सामाजिक एवं साहित्यिक सेवा के लिए शुभकामना। पुस्तकों की प्राप्ति हेतु लेखक से इस दूरभाष 9922255597 पर सम्पर्क करें।

**-सचिव, संस्कृति रक्षक मंच, लातूर**

## साहित्य समीक्षा : नियमित स्तम्भ

आर्यावर्त केसरी के इस नियमित स्तम्भ में आर्य जगत के विद्वान लेखकों तथा रचनाकारों की बहुमूल्य कृतियों की समीक्षाएं प्रकाशित की जाती हैं ताकि उनके विषय में जिज्ञासु पाठकों, मननशील शोधार्थियों, मनीषियों तथा विभिन्न धार्मिक सामाजिक, सांस्कृति व शैक्षणिक संस्थाओं को उपयोगी जानकारी मिल सके। इस दृष्टि से इस स्तम्भ में विद्वान, रचनाकारों तथा प्रकाशकों की कृतियों का स्वागत है। एतदर्थ उनसे अनुरोध है कि किसी भी पुस्तक की समीक्षा हेतु उसकी न्यूनतम दो प्रतियां अग्रांकित पते पर भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

**डॉ. बीना रुस्तगी,** साहित्य सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221

# श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा

हमारे देश में अनेक गुरुकुल हैं। उन्हीं में से एक सुविख्यात गुरुकुल है 'श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय। उत्तर प्रदेश के जनपद अमरोहा के ग्राम चोटीपुरा, पोस्ट रजबपुर में स्थित इस गुरुकुल की गणना देश के श्रेष्ठतम कन्या गुरुकुलों में की जाती है। इस गुरुकुल में भारत के लगभग १६ प्रान्तों की ८०० छात्राएं शिक्षित-दीक्षित व संस्कारित हो रही हैं। गुरुकुल का सुन्दर परिसर, उत्तम भवन, भव्य यज्ञशाला, समृद्ध पुस्तकालय एवं विशाल गोशाला की उत्तम सुविधाओं के साथ छात्राएं सादगीपूर्ण व सात्विक वातावरण में विद्याभ्यास व व्रताभ्यास करती हुईं शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं क्रीडा जगत् में गौरवपूर्ण विशिष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त कर रही हैं। यहां की अनेक छात्राएं यूजीसी-नेट व जेआरएफ उत्तीर्ण कर विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत हैं तथा तीन वर्ष पूर्व एक छात्रा ने आईएएस में १२वीं रैंक प्राप्त की है। प्रस्तुत है गुरुकुल की कुछ अन्य विशिष्टताएं।

**यशस्वी आचार्या 'द्वय'**
**आचार्या डॉ. सुमेधा जी एवं आचार्या डॉ. सुकामा जी**

### सुविधायुक्त छात्रावास

गुरुकुल–परिसर में सुविधायुक्त छात्रावास की व्यवस्था है। अध्ययनरत सभी छात्राओं का ब्रह्मचर्यपालन के साथ छात्रावास में निवास अनिवार्य है। इस सामुदायिक व्यवस्था में जहां व्रताभ्यास की साधना का अवसर मिलता है, वहीं विभिन्न स्थानों से आई कन्याओं को पारिवारिक भावना के साथ रहने का सौभाग्य मिलता है।

### आकर्षक व भव्य यज्ञशाला

यहां की विशाल यज्ञशाला गुरुकुल–परिसर की शोभा को द्विगुणित करती है। यहां प्रतिदिन प्रातः सायं श्रद्धापूर्वक सस्वर वेदमंत्रों द्वारा आत्मशुद्धि के लिए ब्रह्मयज्ञ तथा वायुशुद्धि के निमित्त देवयज्ञ (अग्निहोत्र) का सम्पादन होने से यह स्थली वेद के उद्घोष से सदैव गुंजायमान होती है।

### आदर्श गोशाला से गोमय है परिवेश

गुरुकुल में दुग्धादि की व्यवस्था हेतु निजी गोशाला है, जहां छात्राओं के लिए दुग्ध, दही आदि का प्रयोग होता है, तथा गोमय का उपयोग कृषिभूमि को उर्वरा बनाने के लिए किया जाता है।

### वैदिक वांग्मय से समृद्ध पुस्तकालय एवं वाचनालय

गुरुकुल में विभिन्न विषयों सहित वैदिक एवं संस्कृत वांङ्मय की लगभग 10000 पुस्तकों का संकलन है। पुस्तकालय एवं वाचनालय का बहुत ही सुन्दर भवन हैं। यहां अनेक साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक पत्र–पत्रिकाएं भी उपलब्ध रहती हैं।

### गुरुकुल – एक दृष्टि में

◆ स्थापना–काल ६ मार्च १६८८ ईस्वी ◆ संस्थापक व भूमिदाता– महाशय श्री हरगोविन्द सिंह जी, चोटीपुरा ◆ संचालिका– डॉ० सुमेधा प्राचार्या एवं डॉ० सुकामा आचार्या ◆ कक्षाएँ– पंचमी से शास्त्री (B.A.), आचार्य पर्यन्त ◆ छात्रा–संख्या–५००, शिक्षिका– संख्या–३० ◆ परीक्षा–सम्बद्धता– पंचमी से अष्टमी पर्यन्त (उ०प्र० शिक्षा परिषद्) विद्याधिकारी (६–१०) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तर मध्यमा, शास्त्री, आचार्य (महर्षि दयानन्द वि०यि०,रोहतक)। सम्पर्क सूत्र : 09411840712, 09719013756

## 'हमारे गुरुकुल स्तम्भ' तथा भारतवर्षीय गुरुकुल विशेषांक

आर्यावर्त केसरी भारतवर्षीय गुरुकुलों पर शीघ्र ही एक भव्य विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। साथ ही, 'हमारे गुरुकुल स्तंभ' के अन्तर्गत भारत के गुरुकुलों के विषय में मूल्यवान परिचयात्मक सामग्री प्रकाशित की जा रही है। अतः गुरुकुलों के संस्थापकों, अधिष्ठाताओं, कुलपतियों तथा आचार्यजनों से अनुरोध है कि अपने गुरुकुलों का इतिवृत्त (संक्षिप्त परिचय) चित्र सहित यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि इनका समुचित समायोजन करते हुए विशेषांक को भव्य स्वरूप प्रदान किया जा सके। धन्यवाद, —सम्पादक

## काव्य जगत

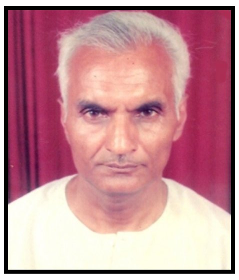

### ऋग्वेद दोहावली

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

**प्रथम मण्डल, द्वितीय सूक्त, मंत्र १ से ५**

ऋक् के रंगों से रंगी, दोहों की हर रेख।
इनमें प्रभु के लेख को देख सके तो देख।।
दुर्गुण हर्ता वायु सम वायु वायु नाम की छाप।
हृदय हमारे आयें प्रभु दर्शनीय हैं आप।।
जितनी भी है सौम्यता सोम कणों की गाथ।
इनमें हम सब भक्त गण हुए अलंकृत नाथ।
रोके हैं यह सोम–कण मात्र आपके हेतु।
विनती सुन रक्षा करें हमको देवें चेतु।।1।।
वायु नाम प्रभु आप हैं हर्ता दुख अरु रोग।
करें स्तवन आपका सोम संयमी लोग।।
सदा आपकी ओर बढ़ किया करें सुख–भोग।
तथा बनें नित सोम के सवन जनन के जोग।।
सोम सुरक्षा कर बनें सोम–सुरक्षक ख्यात।
अरु जीवन को बनायें सदा यज्ञमय ज्ञात।।2।।
वायु सम प्रभु आपकी वेद वाणी हितकार।
उस मिले जो आपको लेता है चित धार।।
वाणी से तव चरणों में भक्त समर्पित होय।
अरु अपने तन सोम का रक्षण करता सोय।।
वेद–वाणी उसको करे व्यापक ज्ञान प्रदान।
विकसित तन उसका करे करती शक्ति–प्रधान।।3।।
क्रियाशील इन्द्रियजित पुरुषों सात्विक सोम।
बना तुम्हारे हेतु है करो अंध का होम।।
परमैश्वर्य ज्ञान का प्राप्त कराने हेतु।
इसे तुम्हीं को है दिया इससे पाओ चेतु।।
पावन अन्न, मन, वचन त्याग वृत्ति उल्लास।
रक्षक बनकर सोम का आओ मेरे पास।।4।।
हे इन्द्रियजित वायु सम गतिमय धारक ध्यान।
तुमको निज तन में जनित सोमों का है ज्ञान।
उन्हें मानते हो तथा ब्रह्म मुहूर्त में जाग।
पाते उषा–काल–धन अरु सराहते भाग।।
तुम इस स्वर्णिम काल में दौड़ लगाते खास।
प्राप्त करो मुझको तथा बैठो मेरे पास।।5।।

### राष्ट्र–वन्दना

डॉ0 राम बहादुर 'व्यथित'

करूँ वन्दना भरत–भूमि की, माँ के चरण पखारूँ।
हिम–किरीट गिरिवर को चूमूँ, गंगा नयन बुहारूँ।।
स्वर्गिक है कश्मीर की घाटी,
झेलम कल–कल बहती।
गंगा–यमुना सुधा–कलश से,
प्यास भूमि की हरतीं।।
करूँ वन्दना वैष्णो माँ की, पावन चरण पखारूँ।
हिम–किरीट गिरिवर को चूमूँ, गंगा नयन बुहारूँ।।
काशी की रज स्वर्ग से बढ़कर
शिव की भस्म विरोज।
वृन्दावन राधा की छम–छम
गोकूल श्याम रिझावै।।
करूँ वन्दना अवध धाम की, सिय के चरण पखारूँ।
हिम–किरीट गिरिवर को चूमूँ, गंगा नयन बुहारूँ।।
परिक्रमा में करूँ द्वारिका,
प्रभु के दर्शन पाऊँ।
पंचवटी को नवा शीश मैं,
शिरडी भोग लगाऊँ।।
करूँ वन्दना जगन्नाथ, हरि के चरण पखारूँ।
हिम–किरीट गिरिवर को चूमूँ, गंगा नयन बुहारूँ।।
रामेश्वरम् तीर्थ सर्वोपरि,
शिव–हरि तिलक लगाऊँ।
तीर्थधाम है भरत–भूमि यह,
चरणों की रज पाऊ।।
करूँ वन्दना पुरी धाम की, वैष्णव चरण पखारूँ।
हिम–किरीट गिरिवर को चूमूँ, गंगा नयन बुहारूँ।।
झाँसी–रानी की समाधि पर,
गीत अश्रुमय गाऊँ।
राण और शिव के सम्मुख,
श्रद्धा–सुमन चढ़ाऊँ।।
करूँ वन्दना सावरकर की, ऊधम चरण पखारूँ।
हिम–किरीट गिरिवर को चूमूँ, गंगा नयन बुहारूँ।।

विजय वाटिका, कोठी नं0–3, सिविल लाइन,
बदायू–243601, मो0नं0–9738618715

ओ३म्
HANDICRAFT
सुषमा कला केन्द्र

आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।
प्रो० सुषमा गोगलानी
मोबा. : 9582436134
प्रतिनिधि–
अशोक कुमार गोगलानी
मोबा. : 8587883198
सी–1/1904 G.H.-05, B-Tech Zone-4, चैरी काउण्टी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

## केवल बातों से ही नहीं होगा गोवंश का संरक्षण

# गाय का कराएं मुनाफे से मेल

डॉ0 भरत झुनझुनबाला

एक जमाने में गाय किसान के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी थी। परिवार के लिए उसके दूध से लेकर खेत में खाद के लिए उसका गोबर भी किसान के लिए उपयोगी था। साथ ही बैल खेती में सहायक होते थे। इस परिस्थिति में मांस के लिए गाय को न मारा जाए, इसलिए हमारे पूर्वजों ने गाय को मां का दर्जा दिया और उसके वध पर सामाजिक प्रतिबन्ध लगाया।

गोबर की भी किसानों को अब उतनी जरूरत नहीं रह गयी है। रासायनिक उर्वरक और हरी खाद के सम्मिश्रण से भूमि की उर्वरता और हरी खाद के सम्मिश्रण से भूमि की उर्वरता को लम्बे समय तक कायम रखा जा सकता है। बैल की भी जरूरत नहीं रह गयी है, क्योंकि जुताई जैसे कृषि कार्यों में ट्रैक्टर कहीं अधिक सुविधाजनक और किफायती हो गया है।

बदली परिस्थितियों में गाय को रखना किसान के लिए घाटे का सौदा हो गया है। अब गाय की उपयोगिता केवल मोक्ष दिलाने के लिए रह गयी है। मेरे एक घनिष्ठ मित्र गोरक्षा को समर्पित हैं। उन्होंने कई सप्ताह तक गोरक्षा ने निमित्त उपवास भी रखा था। उन्होंने कहा कि हम अपने बूढ़े माता-पिता की सेवा करते हैं। सिर्फ इसलिए कि उनसे हमें आशीष-आशीर्वाद मिलता है, भले ही उस उम्र में वे कमाऊ न रह गये हों। इसी प्रकार हमें गाय की सेवा करनी चाहिए, जिससे उसका आशीर्वाद मिले। मैं इस भावना का समर्थन करता हूं, लेकिन हम पड़ोसी से अपेक्षा नहीं करते कि वह हमारे बूढ़े माता-पिता की सेवा करेगा। अपने आशर्वाद के लिए हमें अपने स्तर पर गाय की सेवा करनी होगी। अपने आशीर्वाद के लिए हम गाय को पालने का आर्थिक बोझ किसान पर नहीं डाल सकते। सरकार का कर्तव्य है कि सम्पूर्ण समाज के अध्यात्मिक विकास के लिए गाय की रक्षा करे, जैसे हज अथवा मानसरोवर की यात्रा के लिए प्रबन्ध किया जाता है। सरकार को भारतीय खाद्य निगम यानी एफसीआई की तर्ज पर 'भारतीय गाय निगम' बनाना चाहिए।

इसे जिम्मेदारी दी जाए कि देश में जो भी व्यक्ति गाय या बैल बेचना चाहता हो, उससे वह खरीद ले। खाद्य निगम देश की खाद्य सुरक्षा के लिए खाद्यान्न को जरूरत पड़ने पर औने-पौने दाम पर बेच देता है और सरकार उस घाटे को वहन करती है, जिससे देश की खाद्य सुरक्षा बनी रहे। इसी प्रकार भारतीय गाय निगम द्वारा समाज को गाय के आध्यात्मिक लाभ उपलब्ध कराने के लिए गाय के दूध एवं गोबर को जरूरत पड़ने पर औने-पौने दाम पर बेचना चाहिए। तब गाय का संरक्षण होगा। इस संरक्षण का आर्थिक बोझ सरकार के माध्यम से संपूर्ण समाज पर पड़ेगा।

सरकार ने खामोशी के साथ यह फैसला कर लिया कि वह इतनी बड़ी आर्थिक जिम्मेदारी नहीं लेगी और इसलिए गोवध रोकने को कानून बनाया गया। गोवध पर प्रतिबन्ध लगाकर अनकहे ही आर्थिक बोझ किसान पर डाला जा रहा है, जो कि अनुचित है। यह कदम पूरी तरह असफल होगा। कोई भी किसान अपने बच्चे को भूखा रखकर बछड़े को भोजन नहीं खिलाएगा। आज तमाम बछड़े लावारिस सड़कों पर छोड़े जा रहे हैं। यह नीति नाकाम ही होनी है।

सरकार की इस मंशा को देखते हुए हमें दूसरे स्तर के उपाय पर विचार करना होगा। मूल बात है कि गाय का अर्थशास्त्र विपरीत दिशा में बैठ रहा है। गाय रखना किसान के लिए लाभकारी हो जाए, तो किसान खुद इसके पालन के लिए प्रेरित होगा, जैसे कि अतीत में भी करता था। गाय के आर्थशास्त्र को ठीक करने के लिए दो मोर्चों पर काम करना होगा। गाय के दूध, गोमूत्र एवं गोबर की मांग बढ़ानी होगी, जिससे बाजार में इनका दाम बढ़े। दूसरी तरफ इन उत्पादों की उत्पादन लागत घटानी होगी। मांग बढ़ाने के लिए सरकार ने गोउत्पादों पर शोध कराने का निर्णय लिया है, जो कि सही दिशा में है। इस निर्णय को पुरजोर तरीके से लागू करना चाहिए, परन्तु शोध का परिणा दीर्घावधि में प्राप्त होता है। महान अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कींस ने कहा था, ''इन द लांग रन, वी आर आल डेड।'' यानी एक दिन हम सभी को मर जाना है। सरकार को ऐसी व्यवस्था बनानी होगी कि शोध में परिणाम न आए, तो भी गारेक्षा हा सके। मांग के बढ़ाने के लिए गाय के दूध के गुणों को लेकर जागरूकता का प्रसार करना होगा। सरकार द्वारा बालश्रम, एड्स निवारक, स्वच्छ भारत एवं शौचालय बनाने जैसे कार्यक्रमों के लिए बड़े पैमाने पर मीडिया प्रचार किये गये हैं। इसी तर्ज पर गाय और भैंस के दूध के गुणों के अंतर को समझाना चाहिए।

गाय के दूध में वसा यानी फैट के अलावा अन्य उपयोगी पदार्थ अधिक होते हैं। इन्हें 'सॉलिड नॉन फैट' कहा जाता है। ये स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। इसकी तुलना में भैंस के दूध में फैट अधिक होता है, जो कि खाली ऊर्जा देता है, परन्तु समग्र रूप से स्वास्थ्यवर्धक नहीं होता। गाय और भैंस के दूध में मनोवैज्ञानिक अंतर भी दिखता है। इन तथ्यों को मीडिया के माध्यम से जनता को बताना चाहिए, जिससे लोग स्वयं भैंस के दूध का बहिष्कार करें। वे गाय के दूध की मांग करेंगे तो बाजार में गाय के दूध की मांग बढ़ेगी, उसका दमा बढ़ेगा और किसान के लिए गाय को पालना लाभप्रद हो जाएगा।

गाय के दूध की उत्पादन लागत भी घटानी होगी। गाय की आर्थिक असफलता का एक प्रमुख कारण है कि उसकी नर सन्तान की अर्थव्यवस्था को जरूरत नहीं रह गयी है। बैल की तुलना में ट्रैक्टर से जुताई करना बहुत सस्ता पड़ता है। इसलिए बछड़े को पालने के भय से किसान गाय को ही त्याग रहा है। इसी तरह बूढ़ी गाय को पालना भी किसान के लिए कठिन है।

**(लेखक- वरिष्ठ अर्थशास्त्री एवं आईआईएम बैंगलूरू के पूर्व प्रोफेसर है)**


## देश-विदेश में प्रसारित होने वाले
# आर्यावर्त केसरी
## में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। इस पत्र के देश तथा विदेश में हजारों पाठक हैं। देश की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, आर्यसमाजों, प्रकाशकों, जिज्ञासु पाठकों तक आर्यावर्त केसरी नियमित रूप से पहुंचता है।

विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

**विज्ञापन दर इस प्रकार है-**

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-
स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

**-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099**

# आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

**-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा**
**मोबा. :** 9412139333

## आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

**समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।**

**व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन**
**गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१**
**फोन :** 05922-262033/09412139333


## बैंकाक में पुरोहित चाहिए

थाईलैण्ड की राजधानी स्थित आर्य समाज बैंकाक क लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि से शिक्षण प्राप्त पुरोहित महानुभाव, जो हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषा पर समानाधिकार रखते हों तथा समस्त संस्कार सम्पन्न कराने की योग्यता रखते हों, वे अपना प्रार्थना पत्र विस्तृत बायोडाटा, योग्यता आदि प्रमाण पत्रों एवं पासपोर्ट की फोटोप्रति **'मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, १५- हनुमान रोड, नई दिल्ली- ११०००१'** के पते पर भेजें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

**-विनय आर्य, उपमंत्री**

## 'आर्य समाज के गौरव' ग्रंथ का प्रकाशन

ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा 'आर्य समाज के गौरव' नाम से एक ऐतिहासिक ग्रन्थ, जो हर दृष्टि से संग्रहणीय, प्रशंसनीय तथा अवलोकनीय होगा, प्रकाशित किया जा रहा है। इस ग्रन्थ में ऐसे 100 व्यक्तित्व, जिन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धांतानुसार जीवन का अनुसरण करते हुए आर्य समाज का गौरव बढ़ाया है, का जीवन चरित्र, कृतित्व, रंगीन फोटो सहित समाहित होगा। इनमें आर्य जगत के संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक, विदुषी महिलाएं, राजनेता, शिक्षाविद्, लेखक, समाजसेवी, दानी एवं उद्योगपति आदि सम्मिलित होंगे, जिनकी आयु 40 वर्ष से ऊपर हो।

**ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट, ए-41, लाजपतनगर II,**
निकट- मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 24,
फोन : 011-45791152, 29842527, 9313254938

# महाभारत के बाद दयानन्द ने ही कराई ईश्वर की अनुभूति

पं0 उम्मेदसिंह विशारद

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम व सप्तम सम्मुलास में ईश्वर की अनुभूति करायी व अन्य सम्मुलास में संकेत किया कि महाभारत काल से एक हजार वर्ष पूर्व तक समाज में वेदो का पठन पाठन था, तथा वेदानुसार संस्कार होते थे, और वैदिक संस्कृति, व सभ्यता का ही चलन था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सम्मुलास के प्रारम्भ में ओउम् यह औंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और मृ तीन अक्षर मिलकर एक (ओउम) समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेशवर के बहुत नाम आते हैं। जैसे–अकार से विराट अग्नि और विश्वादि। उंकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञादि नामो का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर के ही हैं। "ओउम्" यह तो केवल परमात्मा ही का नाम है।

ततो विराडजायत विराजो ओधपूरूषः–।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत–।। यजुःअ03?

वेदों के व तैत्तिरीयोपनिषद के प्रमाणों में विराट, पुरूष, देव, आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि, आदि नाम लौकिक पदार्थों के होते है, क्योंकि जहां–जहां उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ जडः छश्य आदि विशेषण भी लिखें हो वहां–वहां परमेश्वर का ग्रहण नहीं होता। वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से प्रथक है, और उपरोक्त मन्त्रों में उत्पत्ति आदि व्यवहार है, इसी से यहां विराट आदि नामों से परमात्मा का ग्रहण न हो के संसारी पदार्थो का ग्रहण होता है। किन्तु जहां–जहां सर्वज्ञादि विशेषण हों वहीं वही परमात्मा और जहां–जहां इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हो वहां–वहां जीव का ग्रहण होता है ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए।

क्योंकि परमेश्वर का जनम मरण कभी नही होता, इससे विराट आदि नाम और जन्मादि विशेषणों से जगत के जड और जीवादि पदार्थों का ग्रहण करना उचित है, परमेश्वर का नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश प्रथम सम्मुलास)

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।

यसतन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समससते।।(ऋ0)

अथार्तः– (प्रश्न) वेदो में अनेक देवता लिखे है उसका क्या अभिप्राय है?

(उत्तर) देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं जैसी कि पृथ्वी परन्तु इसको कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है। देखों इस मंत्र में कि जिसमे सब देवता स्थित है, वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है। यह उनकी भूल है जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं। परमेश्वर देवों का देव होने से महादेव इसलिये कहता है कि वही सब जगत की उत्पत्ति स्थिति, प्रलयकर्त्ता, न्यायाधीश, अधिष्ठाता है।

(ऋचो अक्षरे) अर्थात् जो सब दिव्य गुण, कर्म स्वभाव विद्यायुक्त और जिसमें पृथ्वी, सूयर्यादि लोक स्थित है, ओर जो आकाश के समान व्यापक सब देवो का देव परमेश्वर है उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते वे नास्तिक मन्दमति सदा दुःख सागर मे डूबे ही रहते है। सवर्दा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते है।

ईशा वास्यमिंद सर्व यत्किन्य जगत्यान्जगत–।

तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मागृधःकस्य स्विद्धनम–।। (यजुर्वेद)

अर्थात– हे मनुष्य! जो इस

संसार में जगत है, उस सब मे व्याप्त होकर जो नियन्ता है वह ईश्वर कहाता है। उससे डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांशा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायचरणरूप धर्म से अपने आत्मा से धर्म को भोग।

अहमिन्द्रों न परा जिग्य इध्दंन न मृत्यवे 2 वतस्थे कदाचन–।

सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूखः सख्ये रिषाधन–।। (ऋ0वे0)

अर्थातः मै परमैश्वर्यवान सूर्य के सदृश सब जगत का प्रकाशक हूँ। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यू को प्राप्त होता हूँ। में ही जगत रूप धन का निर्माता हूँ। सब जगत की उत्पत्ति करने वाले मुझी को ही जानो। हे जीवो ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानदि धन को मुझ से मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत–।

स दाधार पृथिवी द्यामु तेमा कस्मैं देवाय हविषा विधेम–।। (यजुर्वेद)

अर्थातः हे मनुष्यो! जे सृष्टि से पूर्ण सुर्यादि तेज वाले लोको का उत्पत्ति स्थान आधार और जो कुछ उत्पन्न हुआ था और होगा उसका स्वामी था, है और होगा। वह पृथ्वी से लेके सूर्यलोक प्रर्यन्त सृष्टि को बना के धारण कर रहा हैं उस सुख स्वरूप परमात्मा ही की भक्ति जैसे हम करें वैसे तुम लोग भी करो। (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम स0) स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपाप विद्धम–। (यजुर्वेद)

ईश्वर की स्तुति– वह परमात्मा सब में व्यापक शीघ्रकारी और अनन्त बलवान जो शुद्ध सर्वज्ञ, सबका अन्तयर्मी, सर्वोपरि, विराजमान, सनातन, स्वंयसिद्ध परमेश्वर अपनी जीव रूप सनातन आदि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत अर्थो का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति अर्थात जिस–जिस गुण से सहित परमेश्वर की स्तुती करना वह सगुणः (अकाय) अर्थात कभी शरीर धारण व जन्म नहीं लेता। (सप्तम स0)

प्रेम व समर्पण का मार्ग ही ईश्वर से साक्षात्कार की अनुभूति करा सकता है।

हम प्रायः कहते है कि हमे ईश्वर की प्राप्ति के लिये ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए। किन्तु बिना अनुभव के हम चिन्तन नहीं कर सकते है। मन ही सर्वाधिक तीव्रगामी है। विचार ही मन की भक्ति हैं किन्तु जहां मन की सीमा समाप्त होती है वहां से परमात्मा की सीमा शुरू होती है। अर्थात जब संसर के भौतिक विचार भक्ति से उपराम होने पर ही उस ईश्वर की अनुभूति होती है। उपनिषदो में कहा गया है कि ईश्वर ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की ओर सारी कर्मेदियों का रूखबाहर की ओर रखा और स्वंय हमारे भीतर हमारी हृदय गुहा में छप गया। हमारी सारी उपलब्धियां बाहर से प्राप्त होती है। इसलिय हम ईश्वर को बाहर पाना चाहते है। इस प्रकार ईश्वर की ओर हमारी पीठ हो जाया करती हैं हम भीतर को छोड कर बाहर तलाश करते है। जो चीज हमारे जितनी निकट होती है, उसके होने का आभास उतना ही क्षीण होता है। और उसका पता तब चलता है जब वह चीज हमसे दूर हो जाती हैं हमने ईश्वर को अपने भीतर होने का बोध खो दिया है। काश हमने कभी परमात्मा को खोया होता तो उसको खोज सकते थे। किन्तु जब हमने उसे खोया ही नही तो उसे कैसे और कहां खोंजे।

इस सन्दर्भ में हमें एक यह बाद याद रखनी चाहिए कि परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं बल्कि एक प्रबल रचनात्मक शक्ति है। जो अद्धश्य हैं, उसकी शक्ति को ध्यान के जरिये निर्विचार होकर हम अनी अतंर चेतना में अनुभव कर सकते है। श्रध्ये मान्य पाठक जी– यह तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित ग्रन्थों से किचिंत मात्र ईश्वर की अनुभूति का संकेत मात्र किया है। ऋषिवर जी के पूर्ण ग्रन्थों को पढने से ही पूर्ण रूप से ईश्वर की अनुभूति हो सकती है।

**वैदिक प्रचारक,**
**गढ़ निवास, मोहकमपुर,**
**देहरादून (उत्तराखण्ड)**
**मोबा. : 9411512019,**
**9557641800**

**अवश्य पढ़ें**

**आज ही मंगाएं**

**आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित विभिन्न संग्रहणीय व उत्कृष्ट पुस्तकें। कम से कम सौ पुस्तकें मंगाने पर विशेष छूट है।**

**सार्वदेशिक धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित १४ आर्यपर्वो से संबंधित एक विशेष पुस्तक**

**आर्य पर्व पद्धति**

**मूल्य : २० रुपये**

**आर्योद्देश्य- रत्नमाला**

**मूल्य : ८ रुपये**

## आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य की स्मृति में स्मारिका-प्रकाशन

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य-जगत की एक प्रख्यात विभूति थे। वे जीवनपर्यन्त 'वानप्रस्थ साधक आश्रम' के विभिन्न प्रकल्पों के लिए समर्पित रहे। उनके विस्तृत कार्यों ने देश-विदेश को प्रभावित किया है। उनकी कार्यशैली, मार्गदर्शन, योजनाएं दीर्घावधि तक सहस्रों व्यक्तियों को प्रेरित करती रहेंगी। हम सभी व्यक्तियों की स्मृतियां उनके पावन संस्मरण से आप्लावित हैं। हमारी इच्छा है कि आचार्य ज्ञानेश्वर जी से संबन्धित अविस्मरणयी प्रेरक संस्मरणों को स्मारिका के रूप में प्रकाशित किया जाए। इस संदर्भ में आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप अपने संस्मरण को लेखबद्ध करके और यदि उनका कोई विशेष चित्र हो, तो वह भी कृपया हमें यथाशीघ्र प्रेषित करें, ताकि वानप्रस्थ आश्रम की इस अभिलाषा में आपका पुनीत सहयोग प्राप्त हो सके। आप अपने लेख और विशेष चित्र को ई-मेल अथवा पत्र-व्यवहार के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

**पत्र व्यवहार का पता :**
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रा0- सागपुर,
जिला- साबरकांठा (गुजरात)- 383307
**E-mail id-** vaanaprastharojad@gmail.com

**अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं**

**आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए**

**आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका**

**आर्य समाज की विचारधारा**

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

**न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।**

**हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333**

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

## सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

**विशेष :** न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

**घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश**

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् ओ३म्

## कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाओ)

## आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 08273236003, 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

## आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता-राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

**आर्यावर्त केसरी**

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
**आर्यावर्त केसरी**
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

# टंकारा चलो : अर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में

# ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

## महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा– 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

**प्रस्थान :** 26 फरवरी 2019 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

**वापसी :** 06 फरवरी 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

### : परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अजमेर**– ऋषि उद्यान, परोपकारिणी सभा, ऋषि निर्वाण स्थली, भिनाय की कोठी, अनासागर झील, जैनपुरी दर्शन, तीर्थराज पुष्कर आदि।
- **अहमदाबाद**- साबरमती आश्रम, अक्षरधाम आदि
- **द्वारिका**– चार धामों में से एक धाम द्वारिका धीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव**- द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर**– महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला आदि।
- **भालका तीर्थ**- वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ**- ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा**- महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

उपरोक्त में से अजमेर अथवा अहमदाबाद में से कोई एक स्थान चुना जाएगा।

### : सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

**इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक 30 सितम्बर 2018 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित होगी। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III व AC II में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल धनराशि रु० 5700/- ( सीनियर सिटीजन के लिए रु० 5200/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित होगी। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनरशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें।** समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

### -: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

**नोट :**

**१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो उसकी सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगा। कोटिशः धन्यवाद;**

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

**-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी**
**आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)- 244221**
**(चलभाष : 09412139333, 8630822099)**

❑ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❑ नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405), ❑ सुमन कुमार वैदिक- सहव्यवस्थापक (09456274350)